गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

वर्ष -11 अंक–11 पाक्षिक समाचार पत्रिका कोलकाता, शनिवार 16 – 31 अगस्त 2025 मूल्यः 5 रुपये RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata

सुविचार

- अच्छे विचार मनुष्य की सबसे अच्छी सजावट होती है।
- ईमानदारी और बुद्धिमानी के साथ किया हुआ काम कभी व्यर्थ नहीं जाता ।
- काम करने से ही कार्यों की सिद्धि होती हैं। केवल मनोरथ से नहीं, सोते हुए सिंह के मुख में कोई मृग प्रवेश नहीं करता हैं।

शेरो-शायरी

तुम्हारी आवाज ही मेरी रूह को छू जाती है।
तुमसे मिलना, मेरी सबसे बड़ी है।

तुमसे मिलकर ये दिल हर लम्हा मुस्कुराता है,
तुम हो तो जहां भी, सारा जहां सजता है।

शुभकामनाएं

79 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पाठकों, विज्ञापनदाताओं व हांकरों को **गंभीर समचार** परिवार की ओर से ढेरों शुभकामनाएं।

-व्यवस्थापक

79वें स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति ने राष्ट्र के नाम दिया संदेश

हमें भारतीय होने का गर्व

नयी दिल्ली : स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि प्यारे देशवासियों आप सभी को मैं हार्दिक बधाई देती हूं। हम सभी के लिए यह गर्व की बात है कि स्वाधीनता दिवस और गणतंत्र दिवस, सभी भारतीय उत्साह और उमंग के साथ मनाते हैं। ये दिवस हमें भारतीय होने के गौरव का विशेष स्मरण कराते हैं। पंद्रह अगस्त की तारीख, हमारी सामूहिक स्मृति में गहराई से अंकित है। औपनिवेशिक शासन की लंबी अवधि के दौरान, देशवासियों की अनेक पीढ़ियों ने, यह सपना देखा था कि एक दिन देश स्वाधीन होगा। देश के हर हिस्से में रहने वाले - पुरुष और महिलाएं, बूढ़े और जवान- विदेशी शासन की बेड़ियों को तोड़ फेंकने के लिए व्याकुल थे। उनके संघर्ष में निराशा नहीं अपितु बलवती आशा का भाव था। आशा का वही भाव, स्वतंत्रता के बाद हमारी प्रगति को ऊर्जा देता रहा है। कल, जब हम अपने तिरंगे को सलामी दे रहे होंगे, तब हम उन सभी स्वाधीनता सेनानियों को भी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे जिनके बलिदान के बल पर, 78 साल पहले, पंद्रह अगस्त के दिन, भारत ने स्वाधीनता हासिल की थी। अपनी स्वाधीनता को पुनः प्राप्त करने के बाद, हम एक ऐसे लोकतन्त्र के मार्ग पर आगे बढ़े जिसमें सभी वयस्कों को मतदान का अधिकार था। दूसरे शब्दों में कहें तो, हम भारत के लोगों ने, अपनी नियति को स्वरूप देने का अधिकार स्वयं को अर्पित किया।

अनेक लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में, , तथा अन्य आधारों पर लोगों के मताधिकार पर पाबंदियां होती थीं। परंतु, हमने ऐसा नहीं किया। चुनौतियों के बावजूद, भारत के लोगों ने लोकतंत्र को सफलतापूर्वक अपनाया। लोकतन्त्र को अपनाना हमारे प्राचीन लोकतांत्रिक मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति थी। भारत-भूमि, विश्व के प्राचीनतम गणराज्यों की धरती रही है। इसे लोकतंत्र की जननी कहना सर्वथा उचित है। हमारे द्वारा अपनाए गए संविधान की आधारशिला पर, हमारे लोकतन्त्र का भवन निर्मित हुआ है। हमने लोकतन्त्र पर आधारित ऐसी संस्थाओं का निर्माण किया जिनसे लोकतान्त्रिक कार्यशैली को मजबूती मिली। हमारे लिए, हमारा संविधान और हमारा लोकतंत्र सर्वोपरि हैं।

अतीत पर दृष्टिपात करते हुए, हमें देश के विभाजन से हुई पीड़ा को कदापि नहीं भूलना चाहिए। आज हमने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाया। विभाजन के कारण भयावह हिंसा देखी गई और लाखों लोग विस्थापित होने के लिए मजबूर किए गए। आज हम इतिहास की गलतियों के शिकार हुए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। प्यारे देशवासियों, हमारे संविधान में ऐसे चार मूल्यों का उल्लेख है जो हमारे लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाए रखने वाले चार स्तंभ हैं। ये मूल्य हैं - न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता। ये हमारी सभ्यता के ऐसे सिद्धांत हैं जिन्हें हमने स्वाधीनता संग्राम के दौरान पुनः जीवंत बनाया। मेरा मानना है कि इन सभी मूल्यों के मूल में, व्यक्ति की गरिमा की अवधारणा विद्यमान है। प्रत्येक व्यक्ति समान है, और सभी को यह अधिकार है कि उनके साथ गरिमापूर्ण व्यवहार हो। स्वास्थ्य-सेवाओं और शिक्षा-सुविधाओं तक, सभी की समान पहुंच होनी चाहिए। सभी को समान अवसर मिलने चाहिए। जो लोग पारंपरिक व्यवस्था के कारण वंचित रह गए थे, उन्हें मदद की जरूरत थी। इन सिद्धांतों को सर्वोपरि रखते हुए, हमने 1947 में एक नई यात्रा शुरू की। विदेशी हुकूमत की लंबी अवधि के बाद, स्वाधीनता के समय, भारत घोर गरीबी से जूझ रहा था। लेकिन, तब से अब तक के 78 वर्षों में, हमने सभी क्षेत्रों में असाधारण प्रगति की है। भारत ने, आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने के मार्ग पर काफी दूरी तय कर ली है और प्रबल आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ता जा रहा है। आर्थिक क्षेत्र में, हमारी उपलब्धियां साफ-साफ देखी जा सकती हैं। पिछले वित्त वर्ष में 6.5 प्रतिशत की सकल-घरेलू-उत्पाद-वृद्धि-दर के साथ भारत, दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढ़ने वाला देश है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में व्याप्त समस्याओं के बावजूद, घरेलू मांग में तेजी से वृद्धि हो रही है। मुद्रास्फीति पर नियंत्रण बना हुआ है। निर्यात बढ़ रहा है।

पीएम मोदी 22 अगस्त को कोलकाता में प्रमुख मेट्रो लिंक को दिखाएंगे हरी झंडी

कोलकाता : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 अगस्त को कोलकाता और आसपास के इलाकों में तीन नई मेट्रो लाइनों का उद्घाटन करेंगे। उद्घाटन के बाद प्रधानमंत्री मेट्रो में सफर भी करेंगे। पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष और सांसद समिक भट्टाचार्य ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में इस कार्यक्रम की जानकारी दी।उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री सबसे पहले कोलकाता एयरपोर्ट से सड़क मार्ग से जेसोर रोड मेट्रो स्टेशन पहुंचेंगे। वहां मेट्रो सेवा का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वे मेट्रो से जेसोर रोड से जय हिंद एयरपोर्ट मेट्रो स्टेशन तक का सफर करेंगे। इसके बाद सड़क मार्ग से दमदम सेंट्रल जेल ग्राउंड जाएंगे, जहां उनके प्रशासनिक और राजनीतिक कार्यक्रम होंगे। बता दें, इससे पहले मार्च 2024 में उन्होंने देश की पहली अंडरवॉटर मेट्रो सेवा का उद्घाटन किया था और हुगली नदी के नीचे से मेट्रो में सफर

किया था। इस बार प्रधानमंत्री ऑरेंज लाइन (न्यू गरिया से एयरपोर्ट) और ग्रीन लाइन (सेक्टर फाइव से हावड़ा मैदान) पर विस्तारित सेवाओं की शुरुआत करेंगे। पीएम मोदी ने इससे पहले न्यू गरिया से रुबी (हेमंत मुखर्जी स्टेशन) तक ऑरेंज लाइन की सेवा शुरू की थी। अब वे रुबी से बेलियाघाटा तक की सेवा की शुरुआत करेंगे। इससे ईएम बाईपास पर न्यू गरिया से बेलियाघाटा तक मेट्रो सेवा उपलब्ध हो जाएगी। समिक भट्टाचार्य ने राज्य सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि राज्य में 43 रेलवे प्रोजेक्ट रुके हुए हैं। अगर किसी राज्य में जमीनी नीति ही स्पष्ट नहीं है और सरकार यह ऐलान कर दे कि हम एक इंच भी जमीन अधिग्रहण नहीं करेंगे, तो रेलवे जैसी योजनाएं कैसे पूरी होंगी? उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र सरकार पूरी कोशिश कर रही है कि बंगाल में रेलवे और मेट्रो की बेहतर सेवाएं मिलें, लेकिन राज्य सरकार की नीतियों के कारण यहां विकास की रफ्तार थम रही है।

ममता ने स्वतंत्रता दिवस पर लोगों को दी बधाई, कहा

देशवासियों के सम्मान की रक्षा की लड़ाई जारी रहेगी

निज संवाददाता : बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस की सुबह देशवासियों को बधाई दी। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। देशवासियों के लिए उनका स्पष्ट संदेश है, देशवासियों के सम्मान की रक्षा की लड़ाई जारी रहेगी।स्वतंत्रता दिवस की सुबह मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपने एक्स-हैंडल पर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने लिखा, आज के दिन, मैं इस धरती को भी नमन करती हूँ। देशबंधु चित्तरंजन दास, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी,

कनाईलाल दत्त, बिपिन चंद्र पाल, प्रीतिलता वद्देदार, मातंगिनी हाजरा, मास्टर दा सूर्य सेन, विनय-बादल-दिनेश, बाघा जतिन जैसे स्वर्णिम पुत्र-पुत्रियाँ इसी धरती पर पैदा हुए थे। इसी बंगाल ने उस दिन विदेशी ताकतों के खिलाफ, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी। संघर्ष हमारे खून में है। आज भी जब हम अन्याय देखते हैं तो दहाड़ उठते हैं। देशवासियों के सम्मान की रक्षा के लिए लड़ाई जारी रखने का आश्वासन देते हुए उन्होंने लिखा, हमारा लक्ष्य उस देश का निर्माण करना है जिसका सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था, उस स्वर्णिम देश का निर्माण करना है जिसके लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी। मुझे विश्वास है कि इस लड़ाई में लोग हमारे साथ खड़े होंगे।

असमानता व भेदभाव दूर होने तक अधूरा है स्वतंत्रता का आलाप

डॉ. प्रियंका सौरभ

15 अगस्त 1947 को हमने विदेशी शासन की बेड़ियों को तोड़ दिया था। तिरंगे की फहराती लहरों में वह रोमांच था, जो सदियों की गुलामी और अत्याचार के बाद जन्मा था। हर चेहरे पर एक ही उम्मीद थीअब अपना देश अपनी मर्ज़ी से चलेगा, अब हर नागरिक को बराबरी का हक़ मिलेगा, अब हम अपने भविष्य के निर्माता होंगे। लेकिन आज़ादी के 78 साल बाद यह सवाल कचोटता है क्या वह सपना पूरा हुआ? आज हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं, हमारी अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है, विज्ञान और तकनीक में नए मुकाम हासिल हो रहे हैं। मेट्रो ट्रेन, डिजिटल पेमेंट, सैटेलाइट मिशन और वैश्विक मंच पर बढ़ता प्रभाव हमें गर्व से भर देता है। लेकिन इस चमक के पीछे एक सच छुपा है हमारी आज़ादी अब भी अधूरी है। यह अधूरापन केवल गरीबी या बेरोज़गारी का नहीं, बल्कि सोच, व्यवस्था और व्यवहार में गहरे बैठी असमानताओं का है। हमारे यहां लोकतंत्र का मतलब अक्सर सिर्फ़ चुनाव रह गया है। हर पांच साल में वोट डालने को ही हम अपनी भागीदारी मान लेते हैं, लेकिन उसके बाद नेता और जनता के बीच एक अदृश्य दूरी बन जाती है। जनता शिकायत करती है, सरकार सफ़ाई देती है, और इसी बहाने असली मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। आज़ादी का असली मतलब यह है कि सत्ता का केंद्र नागरिक हो, और उसकी आवाज़ सिर्फ़ चुनावी भाषणों में नहीं, नीतियों और फैसलों में भी सुनी जाए।हम तकनीक के युग में जी रहे हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने बोलने की आज़ादी को अभूतपूर्व विस्तार दिया है। लेकिन इसी आज़ादी का दुरुपयोग भी बढ़ा है। झूठी खबरें, नफ़रत फैलाने वाले संदेश और डिजिटल विभाजन ने समाज में नई खाइयां बना दी हैं। आज़ादी तभी सार्थक है जब अभिव्यक्ति जिम्मेदारी के साथ हो और डिजिटल स्पेस का इस्तेमाल जागरूकता और प्रगति के लिए किया जाए, न कि भड़काने और बांटने के लिए। आर्थिक मोर्चे पर भारत ने लंबी दूरी तय की है, लेकिन यह सफ़र सबके लिए एक जैसा नहीं रहा। एक ओर हम अरबपतियों की संख्या में दुनिया में आगे हैं, तो दूसरी ओर करोड़ों लोग अब भी रोज़गार, भोजन और इलाज के लिए संघर्ष कर रहे हैं। महानगरों की ऊंची-ऊंची इमारतों की छाया में झुग्गियों की ज़िंदगी किसी को दिखाई नहीं देती। सच्ची आर्थिक स्वतंत्रता का मतलब है कि हर नागरिक को अपनी मेहनत के दम पर जीवन सुधारने का अवसर मिले, और बुनियादी जरूरतों के लिए वह किसी के रहम पर न हो। सामाजिक स्तर पर भी चुनौतियां कम नहीं हैं। जाति, धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव आज भी हमारे समाज में गहराई से मौजूद है। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और सुरक्षा में बराबरी का अधिकार कागजों पर है, लेकिन हकीकत में वे आज भी असमान अवसरों और हिंसा का सामना करती हैं। यह विडंबना है कि एक

'आज़ादी केवल तिथि नहीं, एक निरंतर संघर्ष है। यह सिर्फ़ झंडा फहराने का अधिकार नहीं, बल्कि हर नागरिक को समान अवसर और सम्मान देने की जिम्मेदारी है। जब तक यह जिम्मेदारी पूरी नहीं होती, हमारी स्वतंत्रता अधूरी है।'

ओर हम मंगल पर पहुंचने की तैयारी कर रहे हैं और दूसरी ओर लड़कियों की शिक्षा को बोझ समझने वाले विचार अब भी जिंदा हैं। महानगरों के निजी स्कूल और ग्रामीण इलाकों के जर्जर सरकारी स्कूल एक ही देश के हिस्से हैं, लेकिन दोनों की दुनिया अलग है। बिना मजबूत और समान शिक्षा व्यवस्था के हम एक जागरूक और सक्षम नागरिक समाज नहीं बना सकते, और बिना ऐसे समाज के लोकतंत्र भी मजबूत नहीं हो सकता। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी हालात चुनौतीपूर्ण हैं। कोविड-19 महामारी ने हमारी व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर कर दिया। बड़े-बड़े अस्पताल शहरों में हैं, लेकिन छोटे कस्बों और गांवों में बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं भी सपना हैं। स्वतंत्रता का मतलब यह भी है कि कोई नागरिक इलाज की कमी से अपनी जान न गंवाए, और स्वास्थ्य सेवाएं केवल पैसे वालों के लिए न हों।आज के दौर की सबसे बड़ी चुनौती हैमानसिक गुलामी। हम में से कई लोग आज भी परंपराओं, अंधविश्वासों और पूर्वाग्रहों की जंजीरों में बंधे हैं। बदलाव को अपनाने के बजाय हम अक्सर उसे खतरा मान लेते हैं। असली आज़ादी तब होगी जब हम सोचने, सवाल पूछने और नई राह अपनाने से नहीं डरेंगे। पर्यावरण संकट भी हमारी स्वतंत्रता से जुड़ा हुआ मुद्दा है। अगर हवा, पानी और मिट्टी जहरीली होती जाएगी, तो नागरिक का स्वस्थ जीवन जीने का अधिकार भी खोखला हो जाएगा। हम ट्रैफ़िक सिग्नल तोड़ते हैं, टैक्स चोरी करते हैं, सफाई की अनदेखी करते हैं, और फिर भ्रष्टाचार व अव्यवस्था पर सवाल उठाते हैं। अगर नागरिक अपने कर्तव्य निभाने में ईमानदार नहीं होंगे, तो शासन भी ईमानदार नहीं हो सकता। भारत की ताकत उसकी विविधता है। लेकिन यही विविधता हमारे लिए खतरा भी बन सकती है, अगर हम एक-दूसरे को केवल जाति, धर्म या भाषा के चश्मे से देखें। आज के दौर में हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि हम एक-दूसरे की पहचान का सम्मान करें और मतभेदों को दुश्मनी में न बदलने दें। अब वक्त है कि हम स्वतंत्रता को केवल ऐतिहासिक घटना की तरह न मनाएं, बल्कि इसे एक सतत जिम्मेदारी की तरह जिएं। यह जिम्मेदारी सिर्फ़ सरकार की नहीं, हर नागरिक की है। हमें राजनीति में पारदर्शिता, न्यायपालिका में स्वतंत्रता, मीडिया में निष्पक्षता और समाज में समानता सुनिश्चित करनी होगी। आज के भारत को ऐसी स्वतंत्रता चाहिए जिसमें हर बच्चा बिना डर और भेदभाव के स्कूल जाए, हर युवा को अपनी मेहनत के दम पर अवसर मिले, हर महिला सुरक्षित महसूस करे, हर बुज़ुर्ग को सम्मान और देखभाल मिले, और हर नागरिक अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सके। यही वह भारत होगा जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने बलिदान दिया था। राजनीतिक आज़ादी हमारी यात्रा की शुरुआत थी, लेकिन मंज़िल अभी बाकी है। जब तक हम असमानता, भेदभाव, गरीबी, और अज्ञानता को खत्म नहीं करेंगे, तब तक हमारी स्वतंत्रता का आलाप अधूरा ही रहेगा। इस अधूरेपन को पूरा करना हमारी पीढ़ी की सबसे बड़ी जिम्मेदारी हैक्योंकि आने वाले भारत की पहचान हमारे आज के फैसलों से तय होगी।

मध्यप्रदेश को देश के पहले 'पीएम मित्रा पार्क' की सौगात

25 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे भूमि पूजन

अजय कुमार मोहता, संपादक

भोपाल : मध्यप्रदेश विकास की नई दिशा की ओर अग्रसर है। इस क्रम में एक और ऐतिहासिक अध्याय आगामी 25 अगस्त को जुड़ने जा रहा है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी धार जिले के बदनावर क्षेत्र में देश के पहले 'पीएम मित्रा पार्क' का भूमिपूजन करेंगे। यह परियोजना न केवल मालवा क्षेत्र बल्कि पूरे मध्यप्रदेश और भारत के वस्त्र उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी।

भारत को वस्त्र महाशक्ति बनाने की दिशा में बड़ा कदम

पीएम मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल (पीएम मित्रा) पार्क, भारत सरकार की वह महत्वाकांक्षी योजना है जो 'फार्म से फाइबर, फाइबर से फैक्ट्री, फैक्ट्री से फैशन और फैशन से फॉरेन' यानी 5एफ विज़न पर आधारित है। इस योजना का उद्देश्य भारत को वैश्विक टेक्सटाइल महाशक्ति बनाना है, जिसमें वस्त्र उत्पादन की पूरी शृंखला को एकीकृत करते हुए उसे अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया जाएगा। धार में स्थापित होने जा रहा यह पार्क देश का पहला पीएम मित्रा पार्क होगा, जो टेक्सटाइल सेक्टर में सतत विकास, रोजगार सृजन, और औद्योगिक विस्तार का मजबूत केंद्र बनेगा।

मालवा क्षेत्र को मिलेगा औद्योगिक बूस्ट

बदनावर में पीएम मित्रा पार्क की स्थापना से सम्पूर्ण मालवा क्षेत्र को आर्थिक और औद्योगिक स्तर पर नई उड़ान मिलेगी। यह इलाका अब पीथमपुर की तर्ज पर प्रदेश का दूसरा बड़ा औद्योगिक हब बनने जा रहा है।विशेष रूप से कपास उत्पादक किसानों को इसका सीधा लाभ मिलेगा, क्योंकि यहां स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण और विपणन की सुविधा विकसित की जाएगी। इससे किसानों को न केवल बेहतर मूल्य मिलेगा, बल्कि स्थिर बाजार और रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध होंगे।

3 लाख रोजगार के अवसर

इस पार्क के जरिए अनुमानित 3 लाख लोगों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से स्थायी रोजगार मिलेगा-1 लाख प्रत्यक्ष और 2 लाख अप्रत्यक्ष। सरकार पहले से ही मालवा के विभिन्न जिलों में स्किल डेवलपमेंट सेंटर और प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने की दिशा में काम कर रही है, जिससे स्थानीय युवाओं, महिलाओं और बुनकरों को प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार के लिए तैयार किया जा सके।

- धार का बदनावर क्षेत्र बनेगा भारत का अगला टेक्सटाइल हब
- मालवा के विकास को लगेंगे नए पंख

आधुनिक औद्योगिक आधारभूत संरचना

पार्क लगभग 2,158 एकड़ भूमि में फैला होगा और इसमें 2,000 करोड़ रुपए से अधिक का निवेश प्रस्तावित है। इसे एक ग्रीनफील्ड परियोजना के रूप में विकसित किया जा रहा है जिसमें शामिल होंगी :- 220 केवीए सब-स्टेशन, एससीएडीए-नियंत्रित यूटिलिटीज़, स्टॉर्म वॉटर ड्रेनेज सिस्टम, जलापूर्ति और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली, सीवेज संग्रह नेटवर्क और आधुनिक स्ट्रीट लाइटिंग और सड़कें। इसके अलावा, इसमें 10 एमवीए सौर ऊर्जा संयंत्र, 20 एमएलडी कॉमन एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (सीईटीपी) और महिला श्रमिकों हेतु सुरक्षित आवासीय परिसर जैसी पर्यावरण अनुकूल और सुविधा युक्त संरचनाएं भी शामिल होंगी।

प्लग एंड प्ले मॉडल, निवेशकों के लिए आकर्षक प्रस्ताव

पार्क में 95,750 वर्गमीटर क्षेत्र में फैली 81 प्लग-एंड-प्ले यूनिट्स विकसित की जा रही हैं। इन यूनिट्स के माध्यम से निवेशकों को बिना किसी प्रारंभिक बाधा के उद्योग स्थापित करने की सुविधा मिलेगी। इसके अलावा, दो केंद्रीकृत स्टीम बॉयलर और पाइपलाइन नेटवर्क के ज़रिए उत्पादन लागत में कमी सुनिश्चित की जाएगी।

सुलभ कनेक्टिविटी और मेट्रोपॉलिटन सुविधाएं

बदनावर क्षेत्र को इंदौर मेट्रोपॉलिटन सिटी एरिया में शामिल किया जा रहा है, जिससे इसे मेट्रोपॉलिटन सुविधाओं का भी लाभ मिलेगा। यहां स्थापित होने वाले उद्योगों को विभिन्न तरह की सुविधाएं मिलेंगी। इनमें फोर लेन सड़क नेटवर्क, रेलवे कनेक्टिविटी व एअरपोर्ट से सुगम संपर्क प्रमुख हैं।इस बुनियादी ढांचे से लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति शृंखला के संचालन को बेहतर बनाया जाएगा।

स्थानीय लोगों के लिए समग्र सामाजिक विकास

पार्क केवल औद्योगिक विकास तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह सामाजिक उत्थान का भी माध्यम बनेगा। इसके जरिए-स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि होगी, श्रमिकों हेतु आवासीय सुविधाएं विकसित होंगी, शैक्षिक व स्वास्थ्य संस्थानों में सुधार होगा और महिलाओं के लिए रोजगार के विशेष अवसर सृजित होंगे।

आत्मनिर्भर भारत की ओर एक और कदम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 25 अगस्त को किया जाने वाला भूमिपूजन सिर्फ एक परियोजना की शुरुआत नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत के संकल्प की दिशा में एक और ठोस कदम है। यह देश और दुनिया को यह संदेश देगा कि मध्यप्रदेश अब निवेश के लिए तैयार है और औद्योगिक विकास का नया केंद्र बन रहा है।धार में बनने जा रहा पीएम मित्रा पार्क, भारत के वस्त्र उद्योग के भविष्य को आकार देगा। यह पार्क टेक्सटाइल उत्पादन को नया आयाम देगा, क्षेत्रीय विकास को गति देगा और लाखों लोगों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। 25 अगस्त को होने वाला यह भूमिपूजन न केवल मध्यप्रदेश बल्कि पूरे देश के लिए एक ऐतिहासिक क्षण होगा, जो मालवा क्षेत्र को कृषि आधारित पहचान से निकालकर, उसे भारत का प्रमुख टेक्सटाइल हब बनाएगा।

दुर्गोत्सव में कोलकाता के पंडालों में गूंजेगा दूसरे राज्यों में प्रवासी बंगालियों के उत्पीड़न का मुद्दा

निज संवाददाता : इस बार के दुर्गोत्सव में कोलकाता के विभिन्न पंडालों में दूसरे राज्यों में प्रवासी बंगालियों पर हो रहे कथित उत्पीड़न के मुद्दे को दर्शाया जाएगा। यानी यह मुद्दा महानगर के पंडालों की थी में गूंजेगा। देश के कई राज्यों में प्रवासी बंगाली मजदूरों को बांग्लादेशी बताने पर कई पूजा समितियों ने बंगाल के लोगों के योगदान को दर्शाने का फैसला किया है। गौरतलब है कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी बीजेपी शासित राज्यों में बंगाल के मजदूरों और लोगों के ऊपर अत्याचार का आरोप लगाकर पहले से ही हमलावर हैं। इस बार के पूजा पंडालों में बंगाल की विरासत, प्रवासी मजदूरों की दुर्दशा और प्रमुख

बंगालियों के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक योगदान को रेखांकित करने वाले विषयों पर जोर देने का फैसला किया गया है। पिछले दिनों मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भाषा आंदोलन का भी ऐलान किया था। इतना ही नहीं उन्होंने गानों में बांग्ला भाषा के इस्तेमाल को बढ़ाने की अपील की थी। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार देश के कई राज्यों में बंगालियों पर अत्याचार इस साल कोलकाता में दुर्गा पूजा के प्रमुख विषयों में से एक होगा। बड़े खिलाड़ियों से लेकर नए प्रवेशकों तक, पूजा समितियां बांग्ला बोलने के कारण प्रवासी मज़दूरों के उत्पीड़न पर ध्यान केंद्रित करेंगी। इसी क्रम में बेहाला के आदर्शपल्ली क्लब ने जहां विभाजन के दौरान बंगाली शरणार्थियों की दुर्दशा को अपनी थीम बनाया है, वहीं बागुईहाटी अश्विनीनगर बन्धुमहल 42,000 साल पहले डेल्टा में मानव अस्तित्व से जुड़े बंगाल के इतिहास को दर्शाएगा। अपने 81वें वर्ष में चलता बागान सार्वजनीन की थीम आमि बांग्ला बोलछी (मैं बांग्ला में बोल रहा हूं) है। दिलचस्प बात यह है कि यह पंडाल कवि, नाटककार और गीतकार द्विजेंद्रलाल रॉय के घर के बगल में स्थित है। आयोजक मौसम बनर्जी ने कहा कि हमारा पंडाल बंगालियों के उत्पीड़न पर केंद्रित होगा। दमदम रोड हनुमान मंदिर जयश्री क्लब में पूजा के मुख्य आयोजक संजय दास ने कहा कि हमारी पूजा की थीम इस बात पर केंद्रित होगी कि कैसे बंगाली भाषियों को अवैध रूप से बांग्लादेश भेजा जा रहा है और उनके मूल अधिकार छीने जा रहे हैं, और उनकी बोली जाने वाली भाषा के आधार पर उनका मूल्यांकन किया जा रहा है। बन्धुमहल बांग्ला ओ बंगाली थीम के साथ अपना 45वां वर्ष मना रहा है। पंडाल में रवींद्रनाथ टैगोर, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और राजा राम मोहन राय की प्रतिमाएं होंगी। क्लब के सचिव स्वरूप नाग ने कहा कि दुर्गा पूजा अब केवल मूर्ति दर्शन, प्रार्थना या कुछ खाने तक ही सीमित नहीं रह गई है। हमारा त्योहार अब विश्व मंच पर सम्मान और प्रशंसा का पात्र है। इसीलिए आज पूजा की थीम के विचार पूरे शोध-पत्र जैसे हैं। मालूम हो कि पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा की शुरुआत इस साल 28 सितंबर से होगी और यह 2 अक्टूबर तक चलेगी। दुर्गा पूजा पूरे पश्चिम बंगाल का सबसे बड़ा उत्सव है। बड़ी बात यह कि इसे यूनेस्को ने मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी है।

SREE RAJADHIRAJA JAGANNATHA TRUST

Daitapti Sri Bhabani Das Maharaj ji

Chief Servitor of jagannath puri temple

सिनेमाघरों के प्राइम टाइम शो में रोजाना बांग्ला फिल्म दिखाना होगा अनिवार्य

पश्चिम बंगाल सरकार ने दिया आदेश

निज संवाददाता : बंगाल सरकार ने राज्य के सिनेमाघरों में प्राइम टाइम के समय में बदलाव और बांग्ला फिल्मों को बढ़ावा देने के लिए नया नियम लागू किया है। अब से राज्य के सिनेमाघरों में प्राइम टाइम शो दोपहर 3 बजे से रात 9 बजे तक होगा, जो पहले दोपहर 12 बजे से रात 9 बजे तक था। आदेश में कहा गया है कि सभी सिनेमाघरों के लिए प्राइम टाइम शो में कम से कम एक बांग्ला फिल्म दिखाना अनिवार्य होगा। मल्टीप्लेक्स के लिए भी हर स्क्रीन पर इस दौरान एक बांग्ला फिल्म प्रदर्शित करना जरूरी होगा। नियम का पालन न करने पर राज्य सरकार कार्रवाई करेगी।राज्य सरकार के फैसले पर फेडरेशन ऑफ सिने टेक्नीशियन एंड वर्कर्स ऑफ ईस्टर्न इंडिया के अध्यक्ष स्वरूप विश्वास ने कहा कि हम इस ऐतिहासिक फैसले के लिए पश्चिम बंगाल सरकार और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का आभार व्यक्त करते हैं। सरकार के आदेश के मुताबिक, प्राइम टाइम में बदलाव किया गया है, जो पहले दोपहर 12 बजे से रात 9 बजे तक था, लेकिन अब दोपहर 3 बजे से रात 9 बजे तक होगा। इसके साथ ही, हर सिनेमाघर को इस प्राइम टाइम में कम से कम एक बांग्ला फिल्म दिखानी ही होगी।सिनेमा हॉल मलिक सुरंजन पाल ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि हमारे यहां अधिकतर बांग्ला फिल्में ही चलाई जाती हैं। लेकिन, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक ऐतिहासिक फैसला लिया है कि हर फिल्म को प्राइम टाइम शो में जगह दी जाएगी। बांग्ला अभिनेत्री रितुपर्णा सेनगुप्ता ने बंगाल सरकार के फैसले पर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि यह एक अच्छा फैसला है, क्योंकि बांग्ला फिल्मों को प्राइम टाइम शो के लिए हम काफी समय से आवाज उठा रहे थे। मैं बंगाल सरकार और मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने बांग्ला फिल्मों के बारे में विचार किया। बता दें कि बंगाल सरकार ने यह निर्णय बीते बुधवार को कोलकाता के नंदन में आयोजित एक बैठक के बाद लिया है, जिसमें राज्य के दो मंत्रियों, अरूप विश्वास और इंद्रनील सेन, के साथ अभिनेत्री रितुपर्णा सेनगुप्ता, फेडरेशन ऑफ सिने टेक्नीशियन एंड वर्कर्स ऑफ ईस्टर्न इंडिया के प्रेसिडेंट, सिनेमा हॉल मालिक, डायरेक्टर, डिस्ट्रीब्यूटर और एग्जीक्यूटिव मौजूद थे।

कलकत्ता व्यवसायी मजदूर संस्था का झंडोत्तोलन

निज संवाददाता : कलकत्ता व्यवसायी मजदूर संस्था की ओर से 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मछुआ के फूल कटरा तथा ब्रेबोर्न रोड स्थित गांधी मूर्ति के पास झंडोत्तोलन किया गया। संस्था के अध्यक्ष और कोलकाता नगर निगम के वार्ड 25 के लोकप्रिय पार्षद राजेश सिन्हा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर लोगों में मिठाइयां बांटी गईं। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के महासचिव राजेन्द्र जोशी, रवि ओझा, विशाल, मास्टर जी, लक्ष्मण काकड़ा, राजकिशोर झा, गुंजन चतुर्वेदी, रवि श्रीवास्तव, रोहन दुबे, अवधेश गुप्ता, राजेश साव, शिवा साव, रामेश्वर साव, विशाल शाव, विक्की सिंह, दिलीप सिंह व अन्य का सक्रिय योगदान रहा।

आसनसोल में 12 अक्टूबर को आयोजित होगा 'एक्सप्लोसिव डांस चैम्पियनशिप'

निज संवाददाता : आसनसोल में 'एक्सप्लोसिव डांस चैम्पियनशिप' का आयोजन होने जा रहा है। यह कार्यक्रम शहर के रवींद्र भवन में 12 अक्टूबर को आयोजित होगा। यह एक ऐसा कार्यक्रम होगा जहां विभिन्न नर्तक अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। कार्यक्रम के बारे में इंडियन कल्चरल डांस स्टूडियो के संयोजक व प्रमुख आयोजन कर्ता आनंद पांडे ने बताया- यह एक डांस चैम्पियनशिप है, जिसका मतलब है कि विभिन्न नर्तक एक-दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करेंगे। यह शहर में आयोजित किया जा रहा है, जिससे स्थानीय लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा।उन्होंने बताया कि यह एक रोमांचक कार्यक्रम होगा, जिसमें विभिन्न प्रकार के नृत्य देखने को मिलेंगे। यह शहर के सांस्कृतिक जीवन को बढ़ावा देगा। यह नर्तकों और डांस में रुचि रखने वाले प्रतियोगियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का एक मंच प्रदान करेगा।यह शहर के लिए एक गर्व की बात है कि इस तरह के कार्यक्रम में शहर और राज्य के अलावा अंतर राज्यों यानी कि पूरे देश से हिस्सा लेने के लिए कलाकार उपस्थित होंगे।

स्वतंत्रता दिवस पर फुटबॉल प्रतियोगिता में दिखा जुनून, साहस और एकता का संगम

निज संवाददाता : 79वें स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम एक अलग अंदाज में मनाया गया। सुदामा देवी भगवान दास जायसवाल फाउंडेशन की ओर से महानगर के बेचू चटर्जी स्ट्रीट (जायसवाल समाज भवन के पास) एक दिवसीय दिवा रात्रि इंटरपाड़ा स्ट्रीट फुटबॉल प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में जुनून, साहस और एकता का संगम देखने को मिला। प्रतियोगिता झंडोत्तोलन के पश्चात सुबह 11 बजे शुरू हुई। इस प्रतियोगिता में कुल 8 टीमों ने हिस्सा लिया। दिन भर चली इस शानदार प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की प्रतिभा और दृढ़ संकल्प का शानदार प्रदर्शन देखने को मिला। सुदामा देवी भगवान दास जायसवाल फाउंडेशन के संस्थापक व अध्यक्ष रौशन जायसवाल ने कहा कि यह विजन से प्रेरित है, यह उत्सव एक खेल से कहीं बढ़कर है। कहा जा सकता है कि यह कदम युवाओं को सशक्त बनाने और बाधाओं को तोड़ने का एक आंदोलन है। इस मौके पर फाउंडेशन की ओर से समाज सुधारमूलक कार्यों में अपना बहुमूल्य योगदान देने वालों विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित भी किया गया। रौशन जायसवाल ने कहा कि समाज हित में बढ़-चढ़कर कार्यों को करने की आवश्यकता है। ताकि एक अच्छे समाज और देश का निर्माण हो। कार्यक्रम में बतौर अतिथि तृणमूल नेता कुणाल घोष, स्थानीय पार्षद स्वपना बोस समेत कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहें।

79 वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
SOCIETY BENEFIT CIRCLE
(Registered under Societies registration Act1961)
279/B, Rabindra Sarani, Kolkata - 700006
Phone: 8777035935, 90078 28272
Web: www.societybenefitcircle.com
Email: societybenefitcircle@gmail.com
बिमल दीवान सभापति
संजय हरलालका उप सभापति
नीरज सांगानेरिया उप सभापति
पवन बंसल अध्यक्ष
आदित्य विक्रम तुलस्यान प्रधान सचिव
संजय अग्रवाल (कोषाध्यक्ष)
Bank details:
society benefit circle
A/c: 309005615569, RBL Bank, IFSC-RATN0000246, BRANCH GIRISH PARK
Donation to Society exempted U/S 80G of IT Act 1981 & CSR

80 करोड़ की संपत्ति के मालिक की वृद्धाश्रम में हुई मौत

निज संवाददाता : कहावत 'पूत कपूत तो का धन संचय, पूत सपूत तो का धन संचय', ये सच कर देने वाली कहावत इस समय एक कीड़े की तरह फैल रही है। क्योंकि इस आधुनिक जमाने में परिवार के साथ कोई नहीं रहना चाहता है, चाहे वो अपने मां-बाप ही क्यों न हों।संतान अपने स्वार्थ के चलते मां-बाप के प्यार को भी दरकिनार करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। इसका जीता-जागता उदाहरण आप वृद्धाश्रम में रह रहे लोगों के बीच देख सकते हैं।

ऐसा ही दिल दहला देने वाला मामला वाराणसी में देखने को मिला है। जिसमें पद्मश्री से सम्मानित आध्यात्मिक साहित्यकार श्रीनाथ खंडेलवाल, जो 80 करोड़ संपत्ति के मालिक थे, लेकिन इसके बावजूद उनके बेटे-बच्चों ने उन्हें वृद्धाश्रम में रहने के लिए मजबूर कर दिया। और 80 वर्ष की आयु में उनकी वृद्धाश्रम में मौत हो गई। हद तो तब हुई जब अपने पिता के आखिरी दर्शन करने के लिए और उन्हें कंधा देने के लिए उनका कोई भी परिजन उनके पास नहीं पहुंचा।2023 में पद्मश्री से सम्मानितकाशी के रहने वाले श्रीनाथ खंडेलवाल ने सौ से अधिक किताबें लिखी हैं। जिसके चलते उन्हें 2023 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

79वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई

उमेश राय
प्रदेश सचिव
भारतीय जनता पार्टी
Mob. 9331111575

मणिपालसिग्ना हेल्थ इंश्योरेंस के प्रमुख उत्पाद को मिला 'प्रॉडक्ट ऑफ द ईयर 2025' का सम्मान

निज संवाददाता : भारत की प्रमुख स्टैंडअलोन स्वास्थ्य बीमा कंपनियों में से एक मणिपालसिग्ना हेल्थ इंश्योरेंस को उसके प्रमुख उत्पाद 'मणिपालसिग्ना सर्व :' के लिए प्रतिष्ठित मान्यता मिली है। मणिपालसिग्ना सर्व : को प्रोडक्ट ऑफ द ईयर 2025 (हेल्थ इंश्योरेंस कैटेगरी) चुना गया है। इसकी घोषणा प्रोडक्ट ऑफ द ईयर (पीओवाई) अवार्ड्स के 17वें संस्करण में की गई। यह सम्मान सर्व: की मजबूत उपभोक्ता अपील, नवीन और अनूठी विशेषताओं और पूरे भारत में बदलती स्वास्थ्य आवश्यकताओं के अनुरूप होने को दर्शाता है। प्रॉडक्ट ऑफ द ईयर द रअसल उपभोक्ता-मतों पर आधारित दुनिया का सबसे बड़ा पुरस्कार है, जो उत्पाद नवाचार को मान्यता देता है। यह सम्मान, प्रॉडक्ट ऑफ द ईयर की ओर से शोध फर्म नीलसनआईक्यू द्वारा किए गए एक स्वतंत्र उपभोक्ता सर्वेक्षण पर आधारित है और उपभोक्ता उत्पादों और सेवाओं में उत्कृष्टता के लिए एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रमाणन के रूप में कार्य करता है। इस उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए मणिपालसिग्ना हेल्थ इंश्योरेंस के चीफ डिस्ट्रीब्यूशन ऑफिसर शशांक चापेकर ने कहा-'सर्व: एक समावेशी स्वास्थ्य बीमा समाधान है, जिसे सोच-समझकर हर भारतीय की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है। चाहे वे मेट्रो शहरों में हों या टियर 3 और टियर 4 शहरों में। सर्व: के साथ हमने एक व्यापक समाधान तैयार किया है, जो किफायत, उपलब्धता और नवाचार को एक छत के नीचे लाता है।'

मणिपालसिग्ना हेल्थ इंश्योरेंस की चीफ मार्केटिंग ऑफिसर, सपना देसाई ने कहा-''इस प्रॉडक्ट का नाम 'सर्व:' नाम, जिसका अर्थ है 'सबके लिए', गहरी उपभोक्ता समझ से जन्मा। हम ऐसा उत्पाद बनाना चाहते थे जो हर व्यक्ति से जुड़ सके, चाहे वे अपने आर्थिक या स्वास्थ्य सफर में कहीं भी हों। प्रोडक्ट ऑफ द ईयर के रूप में यह मान्यता हमारे लिए गर्व का क्षण है। मणिपालसिग्ना सर्व : तीन अलग-अलग प्लान विकल्प प्रदान करता है, जो विविध स्वास्थ्य आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किए गए हैं :

* मणिपालसिग्ना सर्व : उत्तम इसमें कस्टमाइज करने योग्य प्लान है, जिसमें अनंत विकल्प असीमित कवरेज प्रदान करता है और ग्राहकों को जीवन की गंभीरतम स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करने की स्वतंत्रता देता है।

* मणिपालसिग्ना सर्व: परम इसमें शून्य वेटिंग पीरियड कवरेज है और यह सभी स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने के लिए अतिरिक्त सुविधा देता है, जिससे ग्राहकों को तुरंत मानसिक शांति मिलती है।

* मणिपालसिग्ना सर्व: प्रथम इसमें बुनियादी स्वास्थ्य बीमा कवरेज है, जो पहली बार खरीदने वालों या मौजूदा ग्राहकों के लिए उपयुक्त है, जो गंभीर बीमारियों से अतिरिक्त सुरक्षा चाहते हैं। बड़ी बात यह कि यह सम्मान मणिपालसिग्ना की इस प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है कि वह जरूरत-आधारित स्वास्थ्य बीमा समाधान तैयार करे, जो सुलभ हों, प्रासंगिक हों और लंबे समय तक मूल्य प्रदान करें।

संपादकीय

खुद ही बनो ताकत

इस स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तरह देश के सामने मौजूदा चुनौतियों से निपटने या उनका सामना करने को लेकर कुछ लक्षित बातें कीं, उनमें संदेश बिल्कुल साफ हैं। इस बार के अपने भाषण में उन्होंने भविष्य की योजनाओं के बारे में बात करने के बजाय मुख्य रूप से उन मुद्दों पर जोर दिया, जो वर्तमान समय में देश को प्रभावित कर रहे हैं या चुनौतियों के रूप में खड़े हैं। इनमें एक ओर आर्थिक मोर्चे पर अमेरिका की तरफ से घोषित शुल्क नीति के भारत पर पड़ने वाले प्रभाव और उससे पार पाने के लिए जरूरी विकल्प खड़े करने की अपनी राह चुनने की बात थी तो दूसरी ओर पाकिस्तान के संरक्षण में पलते आतंकवाद का सामना करते हुए 'आपरेशन सिंदूर' के जरिए दुश्मन देशों को ठोस जवाब देने के उदाहरण सहित परोक्ष रूप से एक चेतावनी भी कि अगर किसी देश ने भारत के खिलाफ नाहक दुस्साहस किया तो उसका मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री ने 'सुदर्शन चक्र' नामक राष्ट्रीय सुरक्षा कवच तैयार करके आने वाले दस वर्षों में देश की सुरक्षा को विस्तार देने, सुदृढ़ीकरण और आधुनिकीकरण करने का भरोसा जताया। जाहिर है, पहलगाम में हुए आतंकी हमले और उसके बाद प्रतिक्रिया में भारत ने जिस तरह 'आपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान स्थित ठिकानों से अपनी गतिविधियां चलाने वाले आतंकवादी संगठनों को सबक सिखाया, उस परिप्रेक्ष्य में आने वाले वक्त में भारत के सामने जैसी चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं, प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में उसके लिए मोर्चेबंदी को लेकर एक संकेत दिया। इसी तरह, अमेरिका ने शुल्क लगाने की नीति के जरिए दुनिया के सामने जैसी व्यापार युद्ध की स्थिति खड़ी की है और इसका भारत के ऊपर जो प्रभाव पड़ेगा, उसके मद्देनजर बिना किसी देश का नाम लिए उन्होंने व्यापार से लेकर रक्षा उत्पादन तक में आत्मनिर्भरता को मुख्य ताकत बनाने की बात कही। उनकी इस बात में छिपे संदेश को समझा जा सकता है कि हम स्वदेशी को मजबूरी में नहीं, मजबूती के साथ उपयोग करेंगे और जरूरत पड़ी तो दूसरों को भी मजबूर करने के लिए उपयोग करेंगे यह हमारी ताकत होनी चाहिए। यह सच भी है कि अमेरिका के साथ भारत का आर्थिक या व्यापारिक संबंध परस्पर सहयोग पर आधारित है और एकतरफा शुल्क लगाने जैसा कोई भी नीतिगत फैसला अमेरिका को भी बुरी तरह प्रभावित कर सकता है। दूसरी ओर, उनके संबोधन में आंतरिक मोर्चे पर रोजगार से लेकर किसानों और युवाओं की समस्या तथा उन्हें संरक्षण देने का संकल्प भी दिखा। मसलन, उनकी घोषणाएं जमीन पर उतरीं, तो 'प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना' के तहत पहली नौकरी पाने वाले युवाओं को पंद्रह हजार रुपए देने और आर्थिक सुधारों के तहत कई तरह के करों में कमी करने की पहल हो सकती है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने जिस तरह किसानों, मछुआरों, पशुपालकों के हितों से कोई समझौता नहीं करने का एलान किया, सिंधु जल समझौते को एकतरफा और अन्यायपूर्ण बताया, उससे साफ है कि अब वे कृषि क्षेत्र में भी नई जमीन तैयार करने और उसे मजबूत करने की बात कर रहे हैं।

अलविदा रजिस्टर्ड डाक. एक युग की खामोश विदाई

आज जब हम तुम्हें विदाई दे रहे हैं, तो यह विदाई नहीं, एक प्रणाम है उस युग को, उस सादगी को, उस धैर्य को, उस अपनापन को, जिसे तुमने वर्षों तक अपने कंधों पर ढोया। अब भले ही डाकघर बदल जाएं, डाकिए डिजिटल हो जाएं, पत्र इतिहास बन जाएं परंतु तुम, रजिस्टर्ड डाक, हमारे लिए सदा अमर रहोगी।

डा. सत्यवान सौरभ

एक सितंबर दो हज़ार पच्चीस को जब भारत डाक की रजिस्टर्ड डाक सेवा औपचारिक रूप से समाप्त कर दी जाएगी, तो संभवतः किसी समाचार पत्र के मुख्य पृष्ठ पर यह नहीं छपेगा, न ही किसी समाचार चैनल पर विशेष चर्चा होगी। यह समाचार जितना सामान्य प्रतीत होता है, उतना ही गहरा असर छोड़ता है उस पीढ़ी पर, जिन्होंने वर्षों तक डाकिये की साइकिल की घंटी सुनकर अपने दिन की शुरुआत की। जिन्होंने पत्रों के माध्यम से रिश्तों को जिया और डाकघर की कतारों में खड़े होकर संवाद की प्रतीक्षा की।रजिस्टर्ड डाक कोई साधारण सेवा नहीं थी। यह उन दिनों की गवाही थी जब हम कागज़ पर स्याही से अपने जज़्बातों को उकेरा करते थे। जब एक लिफ़ाफ़े में कई अनकही बातें, लंबा इंतज़ार और अनगिनत भावनाएं समाहित होती थीं। जब एक पत्र, चाहे वह परिवार के किसी सदस्य का हो या सरकारी दस्तावेज़, केवल कागज़ का टुकड़ा नहीं होता था, बल्कि विश्वास का प्रतीक होता था- कि यह ज़रूर पहुंचेगा, सही हाथों में, सही समय पर।रजिस्टर्ड डाक वह सेतु था, जो गांव को शहर से, मां को बेटे से, प्रेमिका को प्रेमी से और नागरिक को शासन से जोड़ता था। वह न केवल संवाद का माध्यम था, बल्कि संबंधों को सुरक्षित रखने वाला प्रहरी भी था। उसकी विशेषता यह थी कि वह खोता नहीं था, वह भटकता नहीं था। उसका पंजीकरण उसकी सुरक्षा थी, और उसकी प्राप्ति की पावती एक तरह का भावनात्मक संतोष।एक समय था जब डाकिया केवल संदेशवाहक नहीं, बल्कि घर का परिचित चेहरा होता था। उसकी आवाज़, उसकी साइकिल की घंटी और उसकी झोली में छिपे लिफ़ाफ़ों का इंतज़ार हर किसी को रहता था। कोई सरकारी पत्र हो, किसी मामा जी की मनी ऑर्डर, किसी दूर बैठे बेटे का समाचारसब कुछ रजिस्टर्ड डाक के माध्यम से पहुंचता था। और जब पत्र मिलता, तो उसे खोलने से पहले उसे छूकर महसूस किया जाता था। उसके कागज़ की मोटाई, उसके रंग की गहराई और उस पर लगी स्याही की गंध सबमें अपनापन होता था। लेकिन अब समय बदल चुका है। तकनीकी प्रगति ने हमारे संवाद के तरीक़ों को पूरी तरह से बदल दिया है। आज मोबाइल फ़ोन, त्वरित संदेश सेवाएं, सामाजिक माध्यम और अंतर्जाल ने पारंपरिक पत्र-व्यवस्था को लगभग समाप्त ही कर दिया है। अब किसी को इंतज़ार नहीं रहता, सब कुछ पल में भेजा और पल में प्राप्त किया जाता है। ऐसे समय में भारत डाक द्वारा रजिस्टर्ड डाक को औपचारिक रूप से बंद करने और उसे स्पीड डाक में समाहित करने का निर्णय, समयानुकूल और आवश्यक तो है, परंतु भावनात्मक रूप से पीड़ादायक भी।

स्पीड डाक, निस्संदेह आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप एक बेहतर सेवा है। इसमें गति है, निगरानी है, तकनीकी दक्षता है। परन्तु उसमें वह आत्मीयता नहीं है जो रजिस्टर्ड डाक में थी। वह अपनापन, वह धीमा मगर विश्वसनीय संवाद, वह सादगी अब इतिहास बन जाएगी। रजिस्टर्ड डाक का अंत केवल एक सेवा का अंत नहीं है, यह एक युग का अंत है। वह युग जिसमें शब्दों को सहेजा जाता था, जिसमें उत्तर पाने के लिए दिन नहीं, सप्ताहों की प्रतीक्षा की जाती थी। जब एक उत्तर में प्रेम, सम्मान और भावनाओं की परतें होती थीं। आज हम भले ही एक क्लिक में संवाद कर सकते हैं, लेकिन उस संवाद में स्थायित्व और गहराई का अभाव है। हम संदेश तो भेजते हैं, पर भावनाएं नहीं। हम पढ़ते तो हैं, पर समझते नहीं। रजिस्टर्ड डाक उस युग की अंतिम निशानी थी, जहां संवाद सिर्फ़ बात नहीं, एक भावना होता था। हमारे पुराने संदूक़ों में आज भी ऐसी चिट्ठियां मिलती हैंपीले पड़े कागज़, स्याही से भरे अक्षर, किनारों पर समय की छाप और भीतर वह सब कुछ जो किसी समय अनमोल था। वे चिट्ठियां अब केवल स्मृति हैं, किंतु रजिस्टर्ड डाक ने उन्हें आज तक सुरक्षित पहुंचाया। यह उसकी सबसे बड़ी सफलता है कि उसने शब्दों को अमर बना दिया।इस सेवा के बंद होने से एक भावात्मक सूत्र टूटेगा। यह वह सेवा थी, जिसने दूरी को भी एक बंधन बना दिया था। जिसने मां के आंचल से बेटे तक, प्रेमिका की आंखों से प्रेमी तक, शिक्षक की सीख से छात्र तकसबको जोड़ रखा था। अब स्पीड डाक आएगीतेज़, सुविधाजनक, आधुनिक। परंतु उसमें वह ठहराव नहीं होगा, वह धैर्य नहीं होगा, वह प्रतीक्षा नहीं होगी जो रजिस्टर्ड डाक को विशेष बनाती थी।आज हम तकनीकी दृष्टि से जितने सक्षम हुए हैं, उतने ही भावनात्मक रूप से खोखले भी हो गए हैं। संवाद तो अब भी होते हैं, पर उनमें आत्मा नहीं होती। रजिस्टर्ड डाक केवल चिट्ठी नहीं थी, वह आत्मा का दस्तावेज़ थी। अब जब वह विदा ले रही है, तो यह केवल प्रशासनिक निर्णय नहीं है।

यह हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक पृष्ठ बंद होना है।रजिस्टर्ड डाक, तुमने केवल पत्र नहीं पहुंचाए, तुमने रिश्ते पहुंचाए। तुमने हमें जोड़ना सिखायाशब्दों से, भावनाओं से, प्रतीक्षा से, और विश्वास से। तुम भले ही अब औपचारिक रूप से बंद हो जाओ, परंतु हमारी यादों में, हमारे पुराने संदूक़ों में, हमारे दिलों में तुम सदा जीवित रहोगी।आज जब हम तुम्हें विदाई दे रहे हैं, तो यह विदाई नहीं, एक प्रणाम हैउस युग को, उस सादगी को, उस धैर्य को, उस अपनापन को, जिसे तुमने वर्षों तक अपने कंधों पर ढोया। अब भले ही डाकघर बदल जाएं, डाकिए डिजिटल हो जाएं, पत्र इतिहास बन जाएं परंतु तुम, रजिस्टर्ड डाक, हमारे लिए सदा अमर रहोगी।

जानें अपना राशिफल

मेष

सम्भावना भरा समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करें, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, जीवनसाथी पूरा साथ दे सकते हैं, मन शान्त रखें।

वृषभ

समृद्ध समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, कोई अधूरा काम पूरा हो सकता है प्रयास करें, पूरी नैतिकता से काम करने की आवश्यकता है, मन में उत्साह रहेगा।

मिथुन

व्यापार करने वाला समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई बहुत बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है, प्रयास करें, मन स्थिर रखें।

कर्क

स्नेह भरा समय हो सकता है, कोई रुका हुआ मांगलिक कार्य पूरा हो सकता है, किसी नये व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करें, जीवनसाथी पूरा साथ दे सकते हैं। मन में उत्साह रहेगा।

सिंह

सहायक समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करें, किसी विदेश यात्रा करने पर विचार हो सकता है जो सफल रहेगा, मित्र पूरा साथ दे सकते हैं, मन प्रसन्न रहेगा।

कन्या

मान मर्यादा वाला समय हो सकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है। पूरी जिम्मेदारी से काम करने की आवश्यकता है, आपसी प्रेम बनाये रखें। मन प्रसन्न रहेगा।

तुला

सद्भावना रखकर काम करने वाला समय हो सकता है, किसी परिवार के सदस्य से मतभेद भी हो सकता है सावधान रहें। कोई बड़ा फैसला लेने वाला समय भी हो सकता है। मन शान्त रखें।

वृश्चिक

सोच–विचार करके काम करने वाला समय हो सकता है, कोई आपका पुराना काम बिगड़ सकता है सावधान रहें। पूरी नैतिकता से काम करने की आवश्यकता है, आपसी सहमति बनाये रखें। मन स्थिर रखें।

धनु

आर्थिक मंदी वाला समय हो सकता है इसलिए शान्ति से सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई आपका समय खराब करने का प्रयास कर सकता है सावधान रहें। मन वश में रखें।

मकर

अच्छे अवसर मिलने वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, परिवार के लोग पूरा साथ दे सकते हैं, मन प्रसन्न रहेगा।

कुंभ

लक्ष्य प्राप्ति वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है। जीवनसाथी पूरा साथ दे सकते हैं, मन में उत्साह रहेगा।

मीन

अहंकार वाला समय हो सकता है इसलिए शान्ति से सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी परिवार के सदस्य से अनबन हो सकती है, अपनी बुद्धिमानी दिखाने की जरूरत है, मन वश में रखें।

गलती की सजा

रामलाल एक छोटे शहर में रहता था। वो चोरी करता था और रात में घरों में सेंध लगाता था। उसे लगता था कि मेहनत से कुछ नहीं मिलता। एक रात उसने एक अमीर घर में चोरी करने की योजना बनाई। वो खिड़की से अंदर घुसा और कीमती सामान इकट्ठा करने लगा। लेकिन अचानक घरवाले जाग गए। उन्होंने शोर मचाया और पड़ोसियों को बुला लिया। रामलाल भागने की कोशिश करने लगा, लेकिन उसे पकड़ लिया गया। पुलिस आई और उसे जेल में डाल दिया।जेल में रामलाल को बहुत बुरा लगा। वो सोचता, ''अगर मैं मेहनत करता तो आज ये दिन न देखना पड़ता।'' जेल में उसे सिलाई का काम सिखाया गया। उसने मेहनत की और अच्छा सिलाई करना सीख लिया। कई साल बाद वो जेल से बाहर आया। उसने चोरी का रास्ता छोड़ दिया और एक छोटी दुकान खोली। वो कपड़े सिलने लगा और धीरे-धीरे उसकी दुकान चल पड़ी। लोग उसकी मेहनत की तारीफ करने लगे। एक दिन वो उस घर गया जहाँ उसने चोरी की थी। उसने माफी माँगी और कहा, ''मैं बदल गया हूँ।'' घरवालों ने उसे माफ कर दिया।रामलाल ने अपनी कमाई से अपने बच्चों को स्कूल भेजा और एक नई जिंदगी शुरू की। वो कहता, ''गलती ने मुझे सुधरने का मौका दिया।''

कहानी से सीख- ये कहानी बताती है कि गलत रास्ता छोड़कर सही रास्ते पर चलना ही समझदारी है।

ईमानदारी की ताकत

एक छोटे से गांव में रामू नाम का एक लड़का रहता था वह बहुत ही नेक, चतुर और ईमानदार लड़का था। वह हमेशा सच बोलता था और कभी चोरी नहीं करता था। उसकी ईमानदारी के कारण गांव के सभी लोग उसका आदर करते थे। एक रात वह अपने घर के दरवाजे पर सोया था। उसी रात कुछ गांव के व्यक्ति उसके बगल वाले घर में चोरी करके समान ले जा रहे थे।तभी उन लोगों के पैरों की आवाज से रामू की आँख खुल गयी रामू उन लोगों के पास गया और देखा तो वे लोग गांव के ही कुछ व्यक्ति थे जो चोरी करके जा रहे थे। वें लोग रामू को रिश्वत देने लगे और कहने लगे इस बात को तुम किसी से मत बताना।अगले दिन गांव में पंचायत जुटी, जिसमें रामू ने सभी के सामने जा कर सारी बातें सच-सच बता दी। जिसके लिए चोरों को दंड देने की सजा सुनाई गई और रामू की ईमानदारी की सभी ने तारीफ की और उसे गांव के लोगों ने पुरस्कृत भी किया।

कहानियां

नैतिक सीखः ईमानदारी सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक है। यह न केवल दूसरों का विश्वास जीतने में मदद करती है, बल्कि आत्म-सम्मान और शांति भी दिलाता है।

अकबर और बीरबल

एक बार अकबर और बीरबल शिकार करने जा रहे थे, शिकार करते समय अकबर के दायें हाथ का अँगूठा तलवार निकलते समय कट जाता हैं और वह अपने सिपाहियों से बोलता हैं, जाओ किसी वैद्य को बुला कर लाओ। फिर अकबर बीरबल को बुलाता हैं और बोलता हैं कि,''देखो ये क्या हो गया मेरे साथ मेरी हालत तो देखो, बीरबल ने बोला ''महाराज जो भी होता हैं, अच्छे के लिए होता हैं।'' अकबर को गुस्सा आ जाता हैं और अपने सिपाहियों को बोलता हैं ''वैद्य को बाद में बुलाना, पहले इसको ले जाओ, इसे उल्टा लटका के कोड़े मारो और सुबह इसे फांसी दे देना''। इसके बाद अकबर अकेले शिकार पर चला जाता हैं। कुछ आदिवासी उसे पकड़ लेते हैं और उसकी बलि चढ़ाने के लिए उल्टा लटका देते हैं। उसके बाद सभी आदिवासी डांस करने लगते हैं, तभी एक आदिवासी की नजर उसके कटे अंगूठे पर पड़ती हैं। वह बोलता हैं यह तो अशुद्ध हैं। हम इसकी बलि नहीं चढ़ा सकते, इसको छोड़ दो।अकबर को बीरबल की याद आती हैं और वह सोचता हैं अब तक बीरबल को फांसी दे दी गयी होगी। वह तेजी से भागता हुआ आता हैं, और देखता हैं तो बीरबल को फांसी होने ही वाली थी। वह बीरबल के पास जाता हैं और उसको सारी बात बताता हैं और रोने लगता हैं। बीरबल बोलता हैं महराज जो भी होता हैं, अच्छे के लिए होता हैं, फिर से अकबर झुँझला उठा और पूछा इसमें अच्छा क्या है, बीरबल ने बोला महाराज अगर मैं आपके साथ गया होता तो वे लोग मुझे फांसी पर चढ़ा देते।

नैतिक सीखः जो होता हैं अच्छे के लिए होता हैं, परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए।

हल करो हीरो बनो

1. दुनिया का सबसे गहरा महासागर कौन सा है?
क) भारतीय महासागर
ख) अटलांटिक महासागर
ग) प्रशांत महासागर
घ) आर्कटिक महासागर

2. ट्विटर की स्थापना किस वर्ष हुई थी?
क) 2005 ख) 2006
ग) 2007 घ) 2008

3. किस खेल में ''ड्रिबलिंग'' की तकनीक का उपयोग किया जाता है?
क) बैडमिंटन ख) बास्केटबॉल
ग) टेनिस घ) क्रिकेट

4. किस जीव की रीढ़ नहीं होती है?
क) मछली ख) पक्षी
ग) कीड़ा घ) स्तनधारी

5. सूर्य की सबसे बड़ी मात्रा ऊर्जा कैसे उत्पन्न होती है?
क) फ्यूजन ख) फिशन
ग) विद्युत घ) ताप

उत्तर इसी अंक में खोजें

माथापच्ची–9

			2					1
	7			3		9		
		3	8			6	7	5
	8	6		5	3			
	4						6	
			1	7		2	4	
6	5	2			4	8		
		8		6			1	
4					2			

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3 3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 8 का हल

6	7	9	5	8	1	4	3	2
8	5	3	2	4	7	1	9	6
4	1	2	6	3	9	8	5	7
9	3	8	7	5	4	2	6	1
5	2	7	8	1	6	9	4	3
1	6	4	9	2	3	7	8	5
3	4	5	1	7	8	6	2	9
7	8	6	3	9	2	5	1	4
2	9	1	4	6	5	3	7	8

मार लो मुस्की

मरीज (डॉक्टर से)- उम्र लम्बी करने का कोई तरीका बताइये
डॉक्टर- शादी कर लो
मरीज- इससे उम्र लम्बी हो जाएगी
डॉक्टर- नहीं, पर दो फायदे जरूर होंगे।
पहला- लम्बी जिंदगी की चाहत खत्म हो जाएगी
दूसरा- बची जिंदगी लम्बी लगने लगेगी.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

टीचर- ड्राइवर और कंडक्टर में क्या फर्क होता है?
पप्पू- अगर कंडक्टर सो गया तो किसी का टिकट नहीं कटेगा लेकिन अगर ड्राइवर सो गया तो सब का टिकट कटेगा.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

भाभी- बताओ आज खाना कैसा बना था?
देवर- तुम भी न भाभी, बस लड़ने के बहाने ढूंढती हो....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पत्नी- फोन में इतनी धीमी आवाज में किससे बात कर रहे हो?
पति- बहन है
पत्नी- तो फिर इतनी धीमी आवाज में किस लिए?
पति- तेरी है, इसलिए.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

टीचर- भारत से विदेश जाने वाली पहली महिला कौन थी?
राजू- सीता जी, वो ही सबसे पहले श्रीलंका गई थीं
टीचर बेहोश.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

राजू (सुरेश से)- यार आज मैं पड़ोसी के घर चंदा मांगने गया तो
उसने गिरा-गिरा के पीटा
सुरेश- क्यों?
राजू- अब मुझे क्या पता था, उसकी बीवी का नाम चंदा है.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पत्नी- इतने लेट कैसे?
पति- वो क्या हो गया ना की एक आदमी की 2000 रुपये की नोट गुम हो गयी थी।
पत्नी- अच्छा तो तुम क्या उसे ढूंढने में मदद कर रहे थे?
पति- नहीं मै उस नोट पे खड़ा था।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

मास्टर जी- दशमलव किसे कहते हैं?
गप्पू- जब 10 से लव हो जाए, उसी को दशमलव कहते हैं...

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

मास्टर- सबसे ज्यादा नशा किसमें होता है?
छात्र- किताब में
मास्टर- कैसे?
छात्र- क्योंकि किताब खोलते ही नींद आ जाती है.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

चेकअप कराने के लिए पप्पू डॉक्टर के पास जाता है
डॉक्टर शायर होता है, वो पप्पू को अपने शायर अंदाज में दवाई समझाता है
डॉक्टर- दिल लगा के मोहब्बत में धमाल करें,
सिरप को अच्छी तरह से हिला कर इस्तेमाल करें
दिल मेरा टूट गया, उठी जब उसकी डोली,
सुबह, दोपहर, शाम बस एक-एक गोली
डॉक्टर की बात सुनकर पप्पू के होश उड़ गए....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

जज- तुमने पुलिस अधिकारी की जेब में जलती माचिस की तीली क्यों रखी?
चोर- उसने ही कहा था कि अगर जमानत चाहते हो तो पहले जेब गरम करो।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के विश्रामगृह में दो कमरों का जीर्णोद्धार

तारकेश्वर मार्ग के विश्रामगृह में कांवड़ियों की सुविधा के लिए काशी विश्वनाथ सेवा समिति सदैव तत्पर

निज संवाददाता : श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति, तारकेश्वर मार्ग के विश्रामगृह में कांवड़ियों एवं दर्शनार्थियों की सुगम सुविधा हेतु अध्यक्ष विवेक गुप्ता के दिशानुसार कमरा न. 12 एवं 13 का जीर्णोद्धार बीते 2 अगस्त शनिवार को किया गया। स्व. परमेश्वरलाल शर्मा, स्व. परमात्मा देवी शर्मा, स्व. अशोक शर्मा की स्मृति में सुपुत्री सुनीता देवी शर्मा, दामाद प्रमोद कुमार शर्मा एवं देयता राहुल शर्मा द्वारा कमरा न. 12 का जीर्णोद्धार (मॉडर्न स्टाइल) करवाया गया एवं इस कमरे का उद्घाटन नवरतन बैध (उद्योगपति एवं समाजसेवी) (गणेश स्टील एंड अलॉय लिमिटेड) एवं दाता प्रमोद कुमार शर्मा के करकमलों द्वारा किया गया। स्व. जगदीश प्रसाद तुलस्यान (दादाजी) एवं स्व. रामलाल तुलस्यान (पिताजी) की पवन स्मृति में आदित्य विक्रम तुलस्यान एवं उनके सुपुत्र लावण्य तुलस्यान द्वारा कमरा न. 13 का जीर्णोद्धार (मॉडर्न स्टाइल) करवाया गया एवं इस कमरे का उद्घाटन नारायण मोदी (उद्योगपति एवं समाजसेवी) (यूनिक बिस्कुट एन्ड केक्स) डिजिटल द्वारा एवं दाता आदित्य विक्रम तुलस्यान के करकमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधान सचिव बिमल दीवान, उपसचिव पवन बंसल एवं सुभाष सवालदावाला मार्गदर्शक एवं मेला चेयरमैन राजकुमार बोथरा की देखरेख में कार्य पूरा किया गया। श्याम मंदिर संयोजक मनोज चौधरी साथ ही समिति के अन्य कार्यकर्ताओं में दीपक अग्रवाल (चन्दननगर), उमाशंकर जोशी, मोहित सुरेका, सुभाष चंद्र गोयनका, दुर्गाचंद अग्रवाल, महेश काबरा, जयप्रकाश गुप्ता, संजय अग्रवाल (नीमका थाना), विनोद अग्रवाल, शैलेन्द्र कुमार गुप्ता, सुमित झुनझुनवाला ने कार्य को सफल बनाया। समिति परिवार ने सभी पधारे हुए अतिथियों का आभार जताया।

समर्पण समाज गौरव सम्मान समारोह में विशिष्ट विभूतियों का भावपूर्ण अभिनंदन

विशिष्ट अतिथियों ने मुक्त कंठ से की आयोजन की प्रशंसा

निज संवाददाता : समाजोत्थान, साहित्य, शिक्षा और संस्कृति जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में समर्पित भाव से कार्यरत संस्था समर्पण ट्रस्ट द्वारा पिछले बीते 30 जुलाई को कोलकाता स्थित होटल हिंदुस्तान इंटरनेशनल में एक भव्य एवं गरिमामय समर्पण समाज गौरव सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। यह अवसर केवल सम्मान का एक औपचारिक मंच नहीं था, बल्कि उन जीवनमूल्यों और आदर्शों का उत्सव था, जिन पर सामाजिक चेतना, निस्वार्थ सेवा और सशक्त समाज निर्माण की नींव रखी जाती है। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण को केंद्र में रखते हुए तुलसी जलार्पण के साथ हुआ। एक प्रतीकात्मक संकेत कि समाज और जीवन दोनों में संतुलन और शुद्धता का कितना महत्व है। ट्रस्ट के सभापति दिनेश बजाज ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि समाज की इन विभूतियों ने अपने कर्म, विचार और आचरण से समाज को बहुत कुछ दिया है। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक पंकज भालोटिया ने संस्था की गतिविधियों एवं उद्देश्यों की विस्तार से जानकारी दी, वहीं समारोह के मुख्य अतिथि गिरधारीलाल गोयनका ने समर्पण ट्रस्ट के कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए कहा कि यह संस्था समाज सेवा की एक नई गाथा लिख रही है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए, वह कम होगी।

उत्कृष्ट योगदान देने वाली विशिष्ट विभूतियों को समर्पण समाज गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। सजन बंसल को उनकी अनुपम दानवीरता के लिए सम्मानित किया गया। उन्होंने मंच से अपने विचार रखते हुए कहा कि जिसके पास जो आवश्यकता से अधिक हो, उसे समाज सेवा में लगा देना चाहिए। सेवा, केवल दान नहीं, बल्कि एक उत्तरदायित्व है। रामानंद रूस्तगी, जिन्होंने सात दशकों से समाज निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई है, ने भावभीनी शब्दों में कहा कि मैं चार्टर्ड अकाउंटेंट बना और फिर समाज सेवा के लिए तत्पर रहा। लेकिन मुझे इस काबिल समाज ने बनाया है। मैं समाज का ऋणी हूं। राजेश सोंथलिया को सामाजिक चेतना के विस्तार में किए गए जागरूक प्रयासों के लिए सम्मान मिला। उन्होंने कहा, मैंने अपने पिता से समाज सेवा की प्रेरणा ली हूँ। यह कार्य मेरे जीवन का उद्देश्य बन चुका है। श्रीमती पुष्पा मूंधड़ा को समाज सेवा में उनके निः स्वार्थ योगदान के लिए सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं आदिवासी, बनवासी तथा जरूरतमंदों के बीच शिक्षा का अलख जगाने का प्रयास कर रही हूँ। यह कोई उपकार नहीं, बल्कि मेरी जिम्मेदारी है, जिसे निभाते हुए मैं स्वयं को धन्य समझती हूँ।

प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ. लक्ष्मण पल्लै को भी यह सम्मान प्रदान किया गया। यद्यपि वे स्वास्थ्य संबंधी कारणों से समारोह में हैदराबाद से उपस्थित नहीं हो सके, उन्होंने अपना आभार एक भावुक ऑडियो संदेश के माध्यम से प्रकट किया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान मेरे लिए केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में अनुष्का वर्मन, जिन्होंने 12वीं कक्षा की परीक्षा में 99 प्रतिशत अंक प्राप्त किए, को शैक्षणिक उत्कृष्टता सम्मान से सम्मानित किया गया। उनकी उपलब्धि ने युवा वर्ग के लिए प्रेरणा का स्रोत प्रस्तुत किया। समारोह में उपस्थित विशिष्ट अतिथि राजेंद्र खेडेलवाल ने अपने उद्बोधन में ट्रस्ट की कार्यशैली की प्रशंसा करते हुए कहा, यह संस्था बिना किसी आडंबर और प्रचार के, निष्ठा के साथ जो कार्य कर रही है, वह आज के समय में अत्यंत प्रशंसनीय है। विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित गणेश सिंघानिया सपत्नीक अनिता सिंघानिया ने कहा कि समर्पण ट्रस्ट समाज सेवा के जिस निष्ठापूर्वक मार्ग पर कार्य कर रहा है, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। समाज के उन व्यक्तित्वों को सम्मानित करना जिन्होंने अपने जीवन को सेवा, संस्कृति और सरोकारों के लिए समर्पित किया, वास्तव में एक सराहनीय पहल है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ पत्रकार विश्वंभर नेवर ने अपने विचार रखते हुए यह चिंता भी व्यक्त की कि समाज सेवा के क्षेत्र में विगत वर्षों की अपेक्षा अब गंभीरता में गिरावट देखी जा रही है। उन्होंने कहा, कई सामाजिक संस्थाएँ बंद हो रही हैं, जो समाज के लिए शुभ संकेत नहीं हैं। समर्पण ट्रस्ट इस अंधकार में आशा की एक किरण है। ट्रस्ट के महासचिव प्रदीप ढेडिया ने समारोह में कहा, समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाले व्यक्तित्वों को पहचानना और उन्हें सम्मानित करना, न केवल हमारा दायित्व है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा बन सकता है। कार्यक्रम का संचालन महावीर प्रसाद रावत ने अत्यंत सहज एवं प्रभावशाली शैली में किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जयप्रकाश मिश्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बी के मूंधड़ा, राम विलास अग्रवाल, सुभाष मुरारका, विष्णु सराफ, अमित केडिया, मनीषा बजाज, सुधांशु शेखर, विनोद अग्रवाल, पद्माश्री पोद्दार, रजीत भूतोड़िया, मोहन केडिया, गरिमा पोद्दार, अरूप बर्मन समेत अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल प्रबंधन आनंद इवेंट्स द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में गणेश अग्रवाल, महेश भुवालका, पवन बंसल, मनीष बजाज, हरी सोनी एवं अमन ढेडिया विशेष रूप से सक्रिय रहे।

रेलवे ने दुर्घटनाएं रोकने के लिए उठाए कदम

सियालदह मंडल के 31 स्टेशनों पर ऊंचे किए गए प्लेटफॉर्म

- परियोजना पर हुए करीब 37 करोड़ रुपए खर्च

निज संवाददाता : सियालदह रेल मंडल ने दुर्घटना रोकथाम और यात्री सुरक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। यात्री सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म की ऊंचाई बढ़ा दी गई है। इससे रेलवे अधिकारियों को उम्मीद है कि ट्रेनों में चढ़ना और उतरना आसान और सुरक्षित होगा। सियालदह दक्षिण, मुख्य और उत्तर शाखाओं सहित 31 स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म ऊंचा करने का काम अब तक पूरा हो चुका है। शेष 10 स्टेशनों पर यह काम जोरों पर है। इस पूरी परियोजना पर लगभग 37 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। रेलवे सूत्रों के मुताबिक यह कार्य लगभग दो वर्षों से चरणों में चल रहा है। वित्तीय वर्ष 2024-25 से शुरू होकर वित्तीय वर्ष 2025-26 तक। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, सियालदह मंडल के विभिन्न स्टेशनों से प्रतिदिन लाखों यात्री यात्रा करते हैं। लेकिन कई स्टेशनों के प्लेटफॉर्म अभी भी इतने नीचे थे कि ट्रेन में चढ़ते और उतरते समय खतरे की आशंका थी। ट्रेन पकड़ते समय, खासकर वरिष्ठ नागरिकों, बच्चों, विकलांग यात्रियों और भारी बैग या सामान ले जाने वालों के लिए खतरे का खतरा बना रहता था।

रेलवे अधिकारियों का मानना है कि इस प्लेटफॉर्म को ऊंचा करने से ये सभी खतरे काफी हद तक कम हो जाएंगे। इस संबंध में, सियालदह मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) राजीव सक्सेना ने कहा-''यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा हमारे लिए सर्वोपरि है। लंबे समय से कम ऊंचाई वाले प्लेटफॉर्म से दुर्घटनाओं का डर बना रहता था।

अब यह समस्या काफी हद तक दूर हो जाएगी। प्लेटफॉर्म को ऊँचा करने का काम जितनी जल्दी पूरा होगा, उतनी ही जल्दी आम यात्रियों को इसका लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।''सियालदह मंडल भविष्य में न केवल प्लेटफॉर्म, बल्कि स्टेशन के अन्य बुनियादी ढाँचे के विकास पर भी ज़ोर देगा। रेलवे सूत्रों के मुताबिक, आधुनिक टिकट काउंटर, डिजिटल डिस्प्ले, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा व्यवस्था पर ध्यान दिया जा रहा है। यात्रियों का कहना है कि यह पहल वास्तव में उनकी यात्रा को सुरक्षित बनाएगी। दैनिक यात्री कई वर्षों से कम ऊंचाई वाले प्लेटफॉर्म की शिकायत करते रहे हैं। अंततः, वे इस पहल के लिए रेलवे अधिकारियों का धन्यवाद करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र में 40 दिन व्यापी प्राथमिक चिकित्सा शिविर व चश्मों का निःशुल्क वितरण

कोलकाता : राज्य की प्रसिद्ध सेवा संस्था सोसायटी बेनिफिट सर्कल द्वारा हमीरागाछी स्थित संस्था के चिकित्सालय से चश्मों का निःशुल्क वितरण किया गया। माल्या स्टेशन के निकट ग्राम क्षेत्र में संस्था लगातार सेवा कार्य करती रहती है, इसी श्रृंखला में यह एक उत्तम सेवा शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें करीब 62 जरूरतमंदों को निःशुल्क चश्में वितरित किये गये। ज्ञात रहे कि यह वितरण 40 दिन व्यापी प्राथमिक चिकित्सा शिविर के मध्य संचालित हुआ। संस्था गत 10 जुलाई 2025 से इसी स्थान पर श्रवण माह के उपलक्ष्य में यह चिकित्सा शिविर का आयोजन की है जो 18 अगस्त तक चालू रहेगा। जिसमें लाखों कांवड़ियों की सेवा की जाएगी। संस्था के अध्यक्ष पवन बंसल के निर्देश पर संस्था लगातार सेवा कार्य के नए आयामों को छू रही है। सेवा परमो: धर्म: की भावना को आत्मशक्त करके संस्था सभी कार्यों को संपन्न करते आ रही है। अध्यक्ष पवन बंसल के साथ संस्था के प्रधान सचिव आदित्य विक्रम तुलस्यान, कोषाध्यक्ष संजय अग्रवाल (नीम का थाना), मनीष धानुका, सुभाष गोयनका, महेश गोयनका, महेश काबरा, संजय थरड, पवन बैद, अरुण झुनझुनवाला, अनु मिश्र आदि की उपस्थित एवं योगदान से शिविर सुचारू रूप से संपन्न हुआ। यह सारी जानकारी संस्था के प्रधान सचिव आदित्य विक्रम तुलस्यान (चीकू भाई) ने दी।

रक्षाबंधन पर कोलकाता हुनर और जे.डी. बिरला इंस्टीट्यूट का साझा उत्सव

निज संवाददाता : रक्षाबंधन के पावन अवसर पर कोलकाता हुनर ने जे.डी. बिरला इंस्टीट्यूट (जादवपुर विवि से संबद्ध) के साथ मिलकर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में संस्थान के लगभग 20 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। छात्र-छात्राओं ने छोटे बच्चों को राखी बांधी और उनके साथ समय बिताते हुए त्योहार की खुशियां प्रकट कीं। बच्चे और छात्र दोनों ही इस पल का भरपूर आनंद लेते नज़र आए। कोलकाता हुनर के अध्यक्ष अरिफ़ अहमद ने इस अवसर पर कहा- 'रक्षाबंधन केवल भाई-बहन का त्योहार नहीं, बल्कि आपसी प्रेम, सद्भावना और एक-दूसरे के प्रति सम्मान का प्रतीक है।' वहीं कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहीं और समूह की सक्रिय मॉडरेटर भाव्या आतवाण, जे.डी. बिरला इंस्टीट्यूट की एक ऊर्जावान छात्रा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा-''हमारे लिए यह अनुभव बेहद विशेष रहा। छोटे बच्चों के साथ समय बिताकर हमें अपनापन और खुशी का एहसास हुआ।' कार्यक्रम का माहौल प्रेम, भाईचारे और सांस्कृतिक उत्साह से भरा रहा। प्रतिभागियों ने इस पहल को समाज में सकारात्मक संदेश देने वाला बताया और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया।

फर्जी मतदाताओं पर लगाम लगाने को एपिक कार्ड के नियमों में बड़ा बदलाव

- नए निर्देश जारी, 1 सितंबर से लागू होगा नया नियम

कोलकाता : कुछ विधानसभा क्षेत्रों में फ़र्ज़ी मतदाताओं की मौजूदगी! अब घर-घर वोटर कार्ड भेजने का नियम! राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय ने नियम बदल दिया है। अब से डाक विभाग के केंद्रीय कार्यालय यानी जीपीओ से एपिक कार्ड स्पीड पोस्ट के ज़रिए सीधे मतदाता के घर पहुँचेगा। अब एपिक कार्ड ज़िलों में नहीं भेजे जाएँगे। नियम के अनुसार, मतदाता सूची में नाम आते ही, निर्वाचक पंजीयन अधिकारी उसे एपिक कार्ड बनवाने के लिए ज़िला निर्वाचन अधिकारी के पास भेजता है। वहाँ से यह छपाई के लिए सरस्वती प्रेस जाता है। सरस्वती प्रेस उस कार्ड को प्रिंट करके सीधे ज़िला चुनाव अधिकारी को भेजता है। यहाँ से यह निर्वाचक पंजीयन अधिकारी (ईआरओ) के पास जाता है। फिर ईआरओ इसे स्पीड पोस्ट के ज़रिए मतदाता के घर पहुँचाता है। अब मुख्य चुनाव आयुक्त कार्यालय इस नियम में बदलाव कर रहा है। अब से सरस्वती प्रेस में छपने के बाद, एपिक कार्ड डाक विभाग के ज़रिए सीधे मतदाता के घर पहुँचेगा। यह नियम 1 सितंबर से लागू होगा। मुख्य चुनाव आयुक्त कार्यालय ने आदेश दिया है कि सरस्वती प्रेस में पहले से छपे एपिक कार्ड भी डाक विभाग के ज़रिए सीधे मतदाता के घर पहुँचाए जाएँ। और पढ़ें: वे भारत पर दबाव बनाने वाले थे...अब उन्हें जवाब मिल गया! सबके सामने ट्रंप का चेहरा काला पड़ गया...उन्होंने कहा बहरहाल, सरस्वती प्रेस में लगभग डेढ़ लाख वोटर कार्ड छपे हुए अवस्था में पड़े हैं। आयोग के सूत्रों के अनुसार, मुख्य चुनाव आयुक्त कार्यालय ने आदेश दिया है कि उन वोटर कार्डों को डाक विभाग के ज़रिए सीधे मतदाता के घर भेजा जाए।

गोद में लैपटॉप और जेब में मोबाइल रखने वाले पुरुष हो जाएं सावधान

हो सकते हैं नपुंसकता के शिकार

निज संवाददाता : अगर आप लैपटॉप गोद में रखकर घंटों काम करते हैं या मोबाइल फोन को पैंट की जेब में रखते हैं, तो सावधान हो जाइए। कलकत्ता विश्वविद्यालय और इंस्टीट्यूट ऑफ रिप्रोडक्टिव मेडिसिन ने एक अध्ययन किया है। यह अध्ययन चौंकाने वाला और आपको अलर्ट करने वाला है। इस स्टडी से खुलासा हुआ है कि ऐसा करने से पुरुषों में नपुंसकता का खतरा बढ़ सकता है। हालांकि पहले भी इस तरह के कई अध्ययन हो चुके हैं। उन अध्ययनों में यह बात गलत साबित हुई थी कि इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन के संपर्क में आने से शुक्राणुओं की संख्या कम होती है। लेकिन अब कलकत्ता विश्वविद्यालय, जेनेटिक्स रिसर्च यूनिट और मेडिकल इंस्टीट्यूट के इस नए अध्ययन ने पुरानी धारणाओं को चुनौती दी है। स्टडी के लिए 20 से 40 वर्ष की आयु के 1200 पुरुषों को चुना गया। उनके सीमन का सैंपल लिया गया। सीमन से सैंपल के साथ पुरुषों की लाइस्टाइल, काम करने की जगह, खाने की आदतें और नशे की आदतें समेत हर एक पहलू के सवाल पूछे गए जो इससे संबंधित थे।रिसर्च टीम के प्रमुख जूलॉजी के एसोसिएट प्रोफेसर सुजय घोष ने बताया कि डेटा का जब विश्लेषण किया गया तो पता चला कि उनमें से कई लोग अपने मोबाइल फोन को पांच घंटे से अधिक समय तक अपनी पैंट की जेब में रखते थे, या घंटों तक लैपटॉप को अपनी गोद में रखकर काम करते हैं। डेटा विश्लेषण में पाया गया कि रेडिएशन के संपर्क में आने और आनुवंशिक रूप से संवेदनशील व्यक्तियों में एज़ोस्पर्मिया का खतरा बढ़ने के बीच एक महत्वपूर्ण रिलेशन है। एज़ोस्पर्मिया का मतलब होता है वीर्य में शुक्राणुओं की अनुपस्थिति। पाया गया कि यह खतरा 30 वर्ष से कम उम्र के पुरुषों में ज्यादा था। डॉ. सुजय घोष ने कहा कि रिजल्ट से संकेत मिलता है कि जो लोग चुपचाप कुछ जीन में बदलाव करते हैं, उनमें बांझपन का खतरा उन लोगों की तुलना में कम से कम 10 गुना ज्यादा होता है जो ऐसा नहीं करते हैं।डॉ. सुजय ने बताया कि स्टडी के लिए चुने गए 1200 लोगों में से 708 को एज़ोस्पर्मिया पाया गया। वहीं 640 अन्य लोगों में शुक्राणुओं की संख्या सामान्य थी। इन निष्कर्षों ने दुनिया भर के कई अध्ययनों का खंडन किया है। अभी तक दावा किया गया है कि मोबाइल फोन रेडिएशन से बांझपन होने का कोई प्रमाण नहीं है। अमेरिका में यूनिवर्सिटी ऑफ यूटा के एक हालिया पेपर में भी यह बात कही गई। अमेरिका के रिसर्च में तो यहां तक कहा गया कि शुक्राणुओं की संख्या घंटे-घंटे, दिन-दिन और महीने-महीने बदल सकती है।

पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स गिल्ड की सालाना आम सभा संपन्न

निज संवाददाता : अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेले के आयोजक पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स गिल्ड की 49वीं सालाना आम सभा बीते शनिवार की शाम को गिल्ड हाउस, 2बी झामापुकुर लेन में आयोजित हुई। सभा में वर्ष 20252026 के लिए नए पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से चुनाव किया गया। इस मौके पर सुधांशु शेखर दे को गिल्ड का अध्यक्ष, त्रिदिव कुमार चटर्जी को महासचिव, अशोक दे व तापस साहा को उपाध्यक्ष, शुभंकर दे को संयुक्त सचिव और राजू बर्मन को कोषाध्यक्ष चुना गया। इसके अलावा अशोक नारायण बर्मन, उषा चट्टोपाध्याय, मिलिंद दे, शौभिक दे, सुदीप्त दे व योगेश जे. तन्ना गिल्ड के कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

भक्तजनों की सेवा में जुटा श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड

गोविन्द अग्रवाल

लगातार पिछले तीन वर्षों से 90 लाख श्रद्धालुओं को बुलावा देनेवाले देश के शीर्ष पांच सबसे धनाढ्य मंदिरों में शुमार वैष्णो देवी के भक्तजनों की सेवा में जुटे श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की नित नयी प्रशंसातीत योजनाएं पूरे देश का ध्यान आकृष्ट करती आ रही हैं। जम्मू से 48 कि.मी. दूर 5,200 फीट की ऊंचाई पर त्रिकुटा यानी त्रिशिखर में माता वैष्णो देवी मंदिर 108 शक्तिपीठों में भारत का सबसे सुख्यात और पूजनीय तीर्थस्थल है। तीर्थयात्रियों के लिए मुफ्त आवास, भोजन और चिकित्सा सुविधाएं शामिल हैं। इसके अलावा बोर्ड ने यात्रामार्ग की सुविधाओं में सुधार किया है। मसलन नई सड़कों और पटरियों का निर्माण और सुरक्षा कर्मियों की तैनाती।

श्राइन बोर्ड की प्रमुख योजनाएं :

मुफ्त आवास और भोजन : श्राइन बोर्ड यात्रियों को मुफ्त आवास और भोजन प्रदान करता है, खासकर कटरा और भवन क्षेत्र में।

आरती दर्शन और विश्राम : श्राइन बोर्ड गर्बजून व अटका आरती में मुफ्त भाग लेने और विश्राम करने की सुविधा प्रदान करता है, जिसमें कटरा, भवन और अर्धकुमारी शामिल हैं। यहां दिव्यांगों को विशेष सुविधा प्राप्त है। उन्हें हेलीकॉप्टर कोटा और कॉम्प्लिमेंटरी बैटरीचालित कार सेवा भी मुहैया करवाया जाता है। प्रस्तावित दिल्ली-श्रीनगर रेल सेवा के तहत कटरा प्रमुख ट्रांजिट

चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है

स्टेशन होगा। श्राइन बोर्ड की मानें, तो 2024-25 में जनवरी तक मंदिर को नकद दान मिला 171.90 करोड़ रुपये।

वहीं 2024-25 में 27.717 कि.ग्रा. सोना और 3,424.538 कि.ग्रा. चांदी माता के दरबार में दान किया गया था। ऐसा है, माता का वैभव! अव्वल तो हम मां को मां का ही चढ़ावा देते हैं। जबकि उन्हें तो केवल भक्त का भक्तिभाव ही स्वीकार्य है।

स्वास्थ्य सुविधाएं : श्राइन बोर्ड ने यात्रा मार्ग पर स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे को मजबूत किया है, जिसमें सस्ती चिकित्सा देखभाल प्रदान करना शामिल है।

यात्री सुविधाओं में सुधार

बोर्ड ने यात्रामार्ग पर सुविधाओं में सुधार किया है, जिसमें नई सड़कों और पटरियों का निर्माण, और सुरक्षा कर्मियों की तैनाती शामिल है।

प्रसाद सेवा : श्राइन बोर्ड ने नवरात्रि के अवसर पर मुफ्त प्रसाद सेवा शुरू की है और प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल सामग्री का उपयोग करता है।

हेलीकॉप्टर सेवा : श्राइन बोर्ड वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग यात्रियों के लिए हेलीकॉप्टर टिकटों का एक समर्पित कोटा प्रदान करता है।

केबल कार परियोजना : श्राइन बोर्ड ने ताराकोट से सांझीछत तक एक केबल कार परियोजना को मंजूरी दी है, जिससे यात्रा कम समय में पूरी हो जायेगी।

पौधारोपण अभियान : श्राइन बोर्ड ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण अभियान शुरू किया है। श्राइन बोर्ड इन योजनाओं के माध्यम से तीर्थयात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने और उनकी यात्रा को सुगम बनाने का प्रयास करता है। अधकुवारी के दर्शन ड्योढी, बाणगंगा और निकटवर्ती क्षेत्र में क्यू कॉम्प्लेक्स सहित 50 ग्राम और 100 ग्राम के चांदी के सिक्कों का शुभारंभ उल्लेखनीय है। भैरोंजी मंदिर परिसर का पुनर्विकास और मनोकामना परिसर का पुनर्निर्माण योजना भी प्रशंसनीय है। बोर्ड की ओर से 2025-26 के लिए वार्षिक ग्रीन प्लान के कार्यान्वयन को भी मंजूरी दे दी गयी है। कटरा रेलवे स्टेशन के यात्री सुविधा केंद्र में मुफ़्त लंगर सेवा काउंटर से श्रद्धालुओं को बड़ी सहूलियत होगी।

भक्तों में यह मान्यता बेहद प्रचलित है कि जो कोई भी सच्चे दिल से माता के दर्शन करने आता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। लोगों का यह भी मानना है कि जब तक माता ना चाहे, कोई भी उसके दरबार में हाज़िरी नहीं भर सकता। जब उसकी इच्छा होती है, वह किसी ना किसी बहाने से अपने भक्तों को अपने पास बुलाती जरूर है और भक्त भी श्रद्धाभाव से दर्शन करने जाते हैं। मूल गुफा सुरक्षा कारणों से साल में अधिकांश समय बंद रहती है। बता दें कि बहुत कम लोगों को प्राचीन गुफा से माता के दरबार में जाने का सौभाग्य मिलता है। 10 हजार से कम श्रद्धालु होने पर ही इस प्राचीन गुफा का द्वार खोला जाता है। आमतौर पर ऐसा दिसंबर और जनवरी और फरवरी माह में होता है। यह मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि एक ऐसा स्थान है जहां भक्त देवी की अनुकंपा और आशीर्वाद पाने के लिए आते हैं। यह उनकी अटूट आस्था और विश्वास का प्रतीक है। मंदिर में तीन पिंडियां हैं, जो महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती को समर्पित हैं। ये तीनों देवी आदिशक्ति के रूप मानी जाती हैं। माना जाता है, माता वैष्णो देवी के त्रिकुटा पर्वत पर तपस्या करने के बाद में उनका शरीर तीन दिव्य ऊर्जाओं में विलीन हो गया, जो इन तीन पिंडियों के रूप में प्रकट हुईं। यहां भैरवनाथ का प्रसंग अनायास ही आ जाता है।

भैरवनाथ के पीछा किये जाने पर माता वैष्णो देवी ने गुफा में प्रवेश कर महाकाली का रूप धर भैरवनाथ का वध किया, लेकिन भैरवनाथ ने मरते समय जब माता से क्षमा मांगी, तो माता ने उन्हें वरदान दिया कि उनके दर्शन के बाद भक्त भैरवनाथ के दर्शन भी करेंगे, जिससे यात्रा पूरी मानी जायेगी।

नहीं रहे विश्वभारती के पूर्व कुलपति रजत कांत रॉय

निज संवाददाता : विश्वभारती के पूर्व कुलपति और इतिहासकार रजत कांत रॉय का निधन हो गया। उनका जन्म इतिहास से समृद्ध काल में, देश की आज़ादी से ठीक एक साल पहले, 1946 के दंगों से ग्रस्त कोलकाता में हुआ था। पराधीन भारत के एक बच्चे के पूरे करियर में ब्रिटिश और मुगल शासित भारत का इतिहास बार-बार सामने आया। इतिहासकार का बुधवार को 80 वर्ष की आयु में वृद्धावस्था के कारण निधन हो गया। पलासी के युद्ध से लेकर औपनिवेशिक शासन के दौरान औद्योगीकरण की प्रवृत्ति पर उनकी कई महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। उन्होंने बालीगंज राजकीय उच्च विद्यालय से स्कूली शिक्षा प्राप्त की। फिर उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज से इतिहास में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अनिल शील के मार्गदर्शन में शोध करने के बाद, रजत कांत रॉय देश लौट आए और अध्यापन कार्य में लग गए। रजत ने सबसे पहले भारतीय प्रबंधन संस्थान, कलकत्ता में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार संभाला। एक वर्ष तक अध्यापन करने के बाद, वे प्रेसीडेंसी कॉलेज के इतिहास विभाग में चले गए। रजत कांत रॉय ने 31 वर्षों तक रीडर (1975 - 1982) और प्रोफेसर (1982 - 2006) के रूप में अध्यापन किया। वे प्रेसीडेंसी कॉलेज के इतिहास में एकमात्र ऐसे प्रोफेसर हैं जिन्होंने लंबे समय तक सेवा की है। 2006 में, वे विश्वभारती विश्वविद्यालय में कुलपति के रूप में शामिल हुए। 2011 में कुलपति का कार्यकाल समाप्त होने पर, रजत प्रेसीडेंसी लौट आए और इतिहास विभाग में अध्यापन किया।

कांग्रेस ने शुरू की बंगाल विधानसभा चुनाव की तैयारी

- पार्टी राज्य की सभी 294 सीटों पर उतारेगी उम्मीदवार

निज संवाददाता : बदलती परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, बंगाल प्रदेश कांग्रेस पूरे राज्य में 2026 के विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर रही है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शुभंकर सरकार पहले ही घोषणा कर चुके हैं कि वे सभी 294 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेंगे। बीते सोमवार को पत्रकारों के एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा- 'बंगाल की जनता चाहती है कि कांग्रेस अपने चुनाव चिह्न पर चुनाव लड़े। बाद में, हम बदलते हालात में आलाकमान के निर्देशों के अनुसार काम करेंगे।' लेकिन किसी गठबंधन के बारे में क्या? शुभंकर ने कहा- 'आप गठबंधन के बारे में क्यों सोच रहे हैं? कांग्रेस सभी 294 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।' कुछ दिन पहले, कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चुनाव आयोग को लेकर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी, जिसमें उन्होंने भाजपा पर वोट चोरी के आरोपों को उजागर किया था। उस दिन, विधान भवन में पार्टी कार्यकर्ताओं और राहगीरों को उनकी प्रेस कॉन्फ्रेंस का वीडियो दिखाया गया था। बाद में, शुभंकर ने कहा-'राहुल गांधी ने वोट चोरी का मुद्दा उठाया है। यही डिजिटल इंडिया का महत्व है।'

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने तृणमूल कांग्रेस पर राज्य में वोट चोरी का भी आरोप लगाया। भाजपा और आयोग की भूमिका की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि इस पर लगातार विरोध-प्रदर्शन जारी रहेंगे। शुभंकर सरकार ने राज्य में वोट आतंकवाद और वोट चोरी को लेकर तृणमूल सरकार पर लगातार हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया-'पश्चिम बंगाल में वोट आतंकवाद है। यह पहले होता था, लेकिन अब यह संस्थागत हो गया है। दूसरे राज्यों में मौतें होती थीं, अब पश्चिम बंगाल में, जब भी वोट पड़ता है, मौतें होती हैं। पश्चिम बंगाल में वोट चोरी देखी जा रही है।' शुभंकर ने राज्य में कांग्रेस के शून्य में चुनाव आयोग की भी भूमिका होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा-'इस राज्य में कांग्रेस के शून्य में चुनाव आयोग की भी भूमिका है। जिसे तटस्थ भूमिका निभाने की ज़रूरत है, उसकी भूमिका को समझा जाना चाहिए।' हालांकि कांग्रेस का एक बड़ा वर्ग दावा करता है कि तृणमूल सरकार पर इस तरह निशाना साधने के पीछे शुभांकर की मंशा पार्टी कार्यकर्ताओं को मज़बूत करना है। प्रांतीय नेतृत्व इस दिन पार्टी के सभी स्तरों के कार्यकर्ताओं के साथ पत्रकारों से रूबरू हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य राहुल गांधी के संदेश को अखिल भारतीय स्तर पर पहुंचाना है।

अजब-गजब

शेर और शेरनी के बीच रोचक अंतर

नर शेर और मादा शेरनी के आकार में काफी अंतर होता है। शेर का वजन 330 से 550 पाउंड तक हो सकता है जबकि मादा शेरनी का वजन 265 से 395 पाउंड तक ही होता है। शेर के सिर पर एक घनी अयाल होती है, जो शेरनी में नहीं होती है। अयाल शेर के शक्तिशाली होने का प्रतीक है। शेर झुंड की रक्षा और बड़े शिकार करते हैं तो वहीं शेरनी शावकों की देखभाल और छोटे शिकार करती हैं।

काला बाघ

ये एक दुर्लभ प्रजाति का बाघ है जिसे 'छद्म मेलेनिस्टिक बाघ' या 'काला बाघ' कहते हैं। ये इतने दुर्लभ हैं कि पूरी दुनिया में पिछले 30 सालों में ये सिर्फ 10 बार देखे गए हैं। इनका ये गहरा काला रंग इनमें अधिक पाई जाने वाली मेलानिन की वजह से है। बाघ का यह वीडियो 'सिमिलिपाल टाइगर रिज़र्व' में लगे कैमरे से खींची गई है। गौरतलब है कि मेलेनिस्टिक बाघ - एक दुर्लभ जीन समूह जिस पर काली धारियाँ रॉयल बंगाल टाइगर की तुलना में कहीं अधिक प्रमुख होती हैं- केवल ओडिशा में ही पाए जाते हैं। घने और गहरे रंग की धारियों के कारण इन्हें अक्सर काले बाघ कहा जाता है। 'प्रकृति हमें हमेशा हैरान करती है। यह दुर्लभतम में से एक है... ओडिशा के जंगलों से एक पूरा छद्म मेलेनिस्टिक बाघ परिवार।'

खूबसूरत वॉटरफॉल

यह भारत का खूबसूरत वॉटरफॉल 'सेवेन सिस्टर्स वाटरफॉल' है, जहां 7 अलग अलग झरने एक साथ चूना पत्थर की चट्टानों से नीचे गिरते हैं। मानसून का मौसम (जुलाई से सितम्बर) जब झरने अपने पूरे चरम पर होते हैं।

तिब्बत में मिली प्राचीन व विशाल लाइब्रेरी

तिब्बत में एक प्राचीन और विशाल लाइब्रेरी मिली है, जो शाक्य मठ (स्थापना 1073) में स्थित है। यह लाइब्रेरी शाक्य मठ में एक विशाल दीवार के पीछे छिपी हुई पाई गई थी, जिसकी लंबाई 60 मीटर और ऊंचाई 10 मीटर थी। इस लाइब्रेरी में 84,000 से अधिक प्राचीन पांडुलिपियां हैं, जिनमें से कई मानव इतिहास के 1000 वर्षों से अधिक का इतिहास बताती हैं।

दुनिया की सबसे बुजुर्ग सक्रिय जिमनास्ट

इनका नाम 'जोहाना क्वावास' है। ये जर्मनी की 99 वर्षीय जिमनास्ट हैं। इन्होंने 1935 में 10 वर्ष की आयु में जिमनास्टिक में प्रतिस्पर्धा शुरू की थी। वे गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा दुनिया की सबसे बुजुर्ग सक्रिय प्रतिस्पर्धी जिमनास्ट के रूप में प्रमाणित हैं।

ईजेडसीसी में दो साल बाद फिर होगी भाजपा की दुर्गा पूजा

निज संवाददाता : बंगाल भाजपा नेतृत्व एक बार फिर दुर्गा पूजा का आयोजन कर रहा है। 18 जुलाई को खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुर्गापुर में मंच से जय माँ काली, जय माँ दुर्गा का नारा लगाया था। कहा गया था कि भाजपा ने बंगाली भावनाओं का विशेष ध्यान रखते हुए बंगाली को हिंदुत्व के साथ मिलाने पर ज़ोर दिया है। तृणमूल ने इसे लेकर भाजपा पर तंज भी कसा था। लेकिन बंगाल भाजपा फिलहाल तमाम तंजों पर ध्यान दिए बिना अपने लक्ष्य पर अडिग रहना चाहती है, जैसा कि पूर्वांचलीय सांस्कृतिक केंद्र (ईज़ेडसीसी) में खुटीपूजा की की गयी।

ईज़ेडसीसी में रविवार को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष शमिक भट्टाचार्य की उपस्थिति में दुर्गा पूजा की खुटीपूजा संपन्न हुई। भाजपा ने 2020 में पहली बार ईज़ेडसीसी में दुर्गा पूजा का आयोजन किया था। पिछले साल भाजपा ने बंगाल से 18 लोकसभा सीटें जीती थीं। 2021 में फिर से विधानसभा चुनाव हुए। कई लोग अब भी मानते हैं कि पार्टी द्वारा दुर्गा पूजा आयोजित करने की पहल के पीछे यह भी एक कारण था। हालाँकि, इस पूजा की शुरुआत तृणमूल कांग्रेस के एक नेता ने की थी। उस समय, मुकुल रॉय भाजपा में एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। मूलतः, उन्हीं की सलाह पर भाजपा ने ईज़ीसीसी में दुर्गा पूजा शुरू की थी। हालाँकि, विधानसभा चुनाव के तुरंत बाद मुकुल तृणमूल कांग्रेस में लौट आए। पूजा के एक अन्य प्रवर्तक सब्यसाची दत्ता थे, जो उस समय भाजपा में थे। राज्य भाजपा के तत्कालीन पर्यवेक्षक कैलाश विजयवर्गीय ने दोनों नेताओं को पूजा करने की अनुमति दी थी। जिस वर्ष ईज़ीसीसी में भाजपा की दुर्गा पूजा शुरू हुई, उस समय दिलीप घोष पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष थे।

उस माहौल में, केंद्रीय नेतृत्व यह देखना चाहता था कि कोलकाता में भाजपा का कितने दुर्गा पूजा पर नियंत्रण है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि आवश्यक हुआ तो वे उन सभी पूजाओं का उद्घाटन करने आएंगे। लेकिन उस समय, कोलकाता में भाजपा नेताओं के नियंत्रण वाली पूजाएँ मिलना लगभग असंभव था। ऐसे में, मुकुल के सुझाव पर ही, पार्टी की पहल पर ईज़ेडसीसी में दुर्गा पूजा आयोजित की जानी थी। हालाँकि दिलीप शुरू से ही पार्टी की पहल पर दुर्गा पूजा के खिलाफ थे। उनका मानना था कि पार्टी के नेता और कार्यकर्ता व्यक्तिगत रूप से या समितियों में शामिल होकर पूजा कर

सकते हैं, लेकिन पूजा करना किसी राजनीतिक दल का काम नहीं है।इसके बावजूद, भाजपा पहली पूजा को लेकर काफी उत्साहित थी। उस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल माध्यम से इस पूजा का उद्घाटन किया था। लेकिन विधानसभा चुनावों में सपना पूरा न होने के कारण, भाजपा ने किसी तरह 2021 में पूजा आयोजित की। अगले साल पूजा को लेकर अनिश्चितता और बढ़ गई। इसके अलावा, पहले साल की पूजा के बाद पार्टी के भीतर विवाद शुरू हो गया। लेकिन हिंदू लोककथाओं की ऐसी परंपरा है कि अगर एक बार दुर्गा पूजा की जाती है, तो उसे कम से कम तीन बार करना पड़ता है। नतीजतन, तीसरी पूजा 2022 में हुई और दुर्गोत्सव का आयोजन किया गया।उसके बाद, 2023 और 2024 में ईजेडसीसी में कोई पूजा नहीं हुई। हालाँकि, 2023 में, भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने ईजेडसीसी के ठीक सामने स्थित इक्तन छतर पर अपनी पहल पर पूजा का आयोजन किया। लेकिन वह पूजा पिछले साल भी नहीं हुई थी। इस बार, कार्यकारी अध्यक्ष बनने के बाद,ईजेडसीसी की पूजा इस साल अपनी रौनक लौटा रही है! रुद्रनील ने दावा किया कि उस क्षेत्र के पार्टी कार्यकर्ता और समर्थक चाहते थे कि पूजा आयोजित की जाए। क्षेत्र के बुजुर्ग और सम्मानित लोग भी चाहते थे कि ईज़ेडसीसी में फिर से पूजा आयोजित की जाए। इसीलिए इस वर्ष यह व्यवस्था की गई है।

हल करो हीरो बनो का उत्तर

1. प्रशांत महासागर 2.) 2006 3. बास्केटबॉल 4 कीड़ा. 5. फ्यूजन

बीजेपी आलाकमान फिर नहीं दोहराएगा लोकसभा वाली गलती

यूपी विधानसभा चुनाव

जनता की कसौटी पर खरे उतरने व जीत की संभावना को मजबूत करने वाले उम्मीदवारों को ही मिलेंगे टिकट

अजय कुमार (वरिष्ठ पत्रकार)

लखनऊ : उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आ रहे हैं, भारतीय जनता पार्टी ने अपनी रणनीति को और मजबूत करने के लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं। पार्टी आलाकमान अबकी 2024 के लोकसभा चुनाव की गलती नहीं दोहरायेगी, जब अति आत्मविश्वास में बीजेपी ने उन सांसदों का टिकट नहीं काटा था, जिनसे वोटर नाराज चल रहे थे या फिर विवादों में घिरे हुए थे। इसीलिये अबकी बार बीजेपी ने 403 विधानसभा सीटों पर अपने विधायकों और प्रमुख नेताओं के प्रदर्शन का गंभीरता से आकलन शुरू कर दिया है। इस बार पार्टी का लक्ष्य यूपी में हैट्रिक लगाना है, जिसके लिए वह कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। इस प्रक्रिया में विधायकों की क्षेत्रीय सक्रियता, जनता से संवाद, विकास कार्यों की प्रगति, बजट उपयोग और उनकी छवि जैसे मापदंडों पर गहन मूल्यांकन किया जा रहा है। खास तौर पर उन विधायकों पर नजर है, जिनसे जनता नाराज है या जो किसी विवाद में फंसे हैं। ऐसे विधायकों के टिकट कटने की संभावना तेज हो गई है, क्योंकि बीजेपी जीत की गारंटी देने वाले उम्मीदवारों को ही मैदान में उतारना चाहती है।पार्टी सूत्रों के अनुसार, विधायकों का यह ऑडिट गोपनीय तरीके से किया जा रहा है। विधायकों को तीन श्रेणियों, ए, बी और सी में बांटा जा रहा है। जिनका प्रदर्शन कमजोर है या जिनकी छवि विवादों से घिरी है उन्हें सी श्रेणी में रखा जा रहा है और उनके टिकट कटने का खतरा मंडरा रहा है। जनता की नाराजगी का आलम यह है कि कई क्षेत्रों में लोग अपने विधायकों की अनदेखी और विकास कार्यों में लापरवाही से नाखुश हैं। इसके अलावा, कुछ विधायकों के विवादित बयान और कानूनी मसले भी पार्टी के लिए सिरदर्द बने हुए हैं। कुछ विधायकों के नाम इस संदर्भ में चर्चा में हैं। बलिया से बीजेपी विधायक आनंद स्वरूप शुक्ला का नाम विवादों से जुड़ा रहा है। उनके कुछ बयानों और स्थानीय स्तर पर जनता से दूरी की शिकायतें सामने आई हैं, जिससे उनकी स्थिति कमजोर मानी जा रही है।

इसी तरह, मेरठ के एक विधायक पर भी स्थानीय लोगों ने उपेक्षा का आरोप लगाया है और उनके खिलाफ पार्टी के अंदर भी असंतोष की बातें सामने आ रही हैं। यहां तक कि रात-रात भर कथित तौर पर जनसुनवाई करते रहते रहे हैं। कुछ समय पूर्व फतेह बहादुर ने आरोप लगाया है कि यूपी पुलिस के अधिकारी कुछ माफियाओं के साथ मिलकर उनकी हत्या कराना चाहता है। यह कहकर उन्होंने अपनी ही सरकार की किरकिरी करा दी थी।कानुपर के विधायक महेश त्रिवेदी भी सोशल मीडिया पर हर दिन फोटो डाल रहे हैं। पिछले दिनों उन्होंने कानपुर में एक सरकारी कर्मचारी को कान पकड़ कर माफी मांगने को मजबूर कर दिया था। यह विधायक नगर आयुक्त को भी मुर्गा बनाने की बात कह चुके हैं। हद तो तब हुई, जब आजमगढ़ के मंत्री राकेश पांडेय ने मुफ्त राशन बांटने का ढोल पीटा, जबकि राशन की दुकान तो पहले से चल रही थी! कहीं मंदिरों में दर्शन, तो कहीं नुक्कड़ सभाओं में बड़े-बड़े वादे। एक विधायक तो पिछले हफ्ते हर गांव में पौधरोपण करवाने पहुंच गए, पर गांव वालों ने पूछ लिया-''साहब, पिछले पांच साल कहां थे? कानपुर की मंत्री प्रतिभा शुक्ला तो अकबरपुर कोतवाली में इंस्पेक्टर के खिलाफ धरने पर बैठ गईं, ताकि जनता को लगे वो उनके हक के लिए लड़ रही हैं। बलिया के विधायक और परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, जो पहले विवादों में रहे, अब अपने क्षेत्र में हर छोटे-बड़े कार्यक्रम में दिख रहे हैं। हाल ही में एक पुल के उद्घाटन की सूचना न मिलने पर वो नाराज हो गए और अधिकारियों को खरी-खोटी सुनाई। गौरतलब है कि बीजेपी ने अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है, लेकिन यह स्पष्ट है कि पार्टी कमजोर कड़ियों को हटाने में देर नहीं करेगी। दूसरी ओर, विपक्षी दल जैसे समाजवादी पार्टी (सपा) भी इस स्थिति का फायदा उठाने की कोशिश में हैं। सपा ने हाल के उपचुनावों में अपने प्रदर्शन को 2027 का सेमीफाइनल मानते हुए रणनीति बनानी शुरू कर दी है। बीजेपी की इस ऑडिट प्रक्रिया से उन विधायकों में बेचैनी है, जिनका प्रदर्शन संतोषजनक नहीं रहा। पार्टी नेतृत्व ने संकेत दिए हैं कि केवल वही उम्मीदवार टिकट पाएंगे जो जनता की कसौटी पर खरे उतरेंगे और जीत की संभावना को मजबूत करेंगे। खैर, 2027 का चुनाव बीजेपी के लिए चुनौतीपूर्ण होने वाला है, क्योंकि विपक्ष भी ओबीसी और अन्य सामाजिक समीकरणों को भुनाने की कोशिश कर रहा है। ऐसे में, विवादित और अलोकप्रिय विधायकों को हटाकर बीजेपी अपनी स्थिति मजबूत करना चाहती है। यह प्रक्रिया न केवल पार्टी की रणनीति को दर्शाती है, बल्कि यह भी संकेत देती है कि यूपी की सियासत में जनता की नाराजगी अब नजरअंदाज नहीं की जा सकती।खैर, अब जनता भी समझने लगी है कि ये सब चुनावी जुगाड़ हैं। कुछ लोग तारीफ कर रहे हैं, तो कुछ मुंह चिढ़ाते हुए कहते हैं-''पांच साल बाद याद आया जनता का दुख?'' फिर भी, विधायक और मंत्री कोई कसर नहीं छोड़ रहे। अब देखना ये है कि ये हथकंडे कितना रंग लाते हैं। जनता का मूड और आलाकमान का फैसला ही तय करेगा कि कौन पास होता है और कौन फेल!

मुख्यमंत्री के दुर्गा आँगन के फैसले को कैबिनेट ने लगाई मुहर

दुर्गा आँगन बनाने के लिए होगा एक ट्रस्ट का गठन

निज संवाददाता : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने 21 जुलाई को मंच से दुर्गा आँगन बनाने की योजना की घोषणा की थी। कैबिनेट ने उस फैसले पर अपनी मुहर लगा दी। सोमवार को नबान्न में कैबिनेट बैठक के बाद पता चला कि राज्य पर्यटन विभाग और हिडको मिलकर दुर्गा आँगन बनाएंगे। इस अवसर पर मंत्री अरूप विश्वास ने कहा, 'यूनेस्को ने बंगाल में दुर्गापूजा को विरासत का दर्जा दिया है। मुख्यमंत्री ने दुर्गा आँगन बनाने की घोषणा करके उन्हें सम्मानित किया है। उन्होंने यह भी कहा कि दुर्गा आँगन बनाने के लिए एक ट्रस्ट का गठन किया जाएगा। हालाँकि, ट्रस्ट के सदस्य कौन होंगे, इसकी अभी जानकारी नहीं है। नाम की घोषणा बाद में की जाएगी। राज्य प्रशासन को उम्मीद है कि दीघा स्थित जगन्नाथ धाम की तरह दुर्गा आँगन भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनेगा। गौरतलब है कि अक्षय तृतीया पर उद्घाटन किए गए दीघा स्थित जगन्नाथ मंदिर में श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। हालाँकि, विपक्षी भाजपा इस मंदिर की आलोचना करना बंद नहीं कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 18 जुलाई को राज्य के दौरे पर आए थे। अपने बंगाल दौरे के दौरान उन्होंने जय श्री राम का एक भी शब्द नहीं कहा। इसके बजाय, प्रधानमंत्री ने दुर्गा और काली का नाम लिया। इसके ठीक तीन दिन बाद, 21 जुलाई को ममता और अभिषेक बनर्जी ने शहीद संभव मंच से इसी मुद्दे पर प्रधानमंत्री पर निशाना साधा। अगले साल विधानसभा चुनाव हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मोदी को दुर्गा और काली का रक्षक बताकर उन पर हमला बोला। उसी दिन ममता बनर्जी ने मंच से दुर्गा आंगन के निर्माण की घोषणा की। हालाँकि, दुर्गा आंगन का स्थान अभी तक ज्ञात नहीं है। सूत्रों के अनुसार, इसके बारे में विस्तृत जानकारी कुछ ही दिनों में उपलब्ध होगी।

पढ़ाई में जरूरी है अनुशासन

5 तरीकों से बढ़ा सकते हैं अपने बच्चे की सीखने की गति और एकाग्रता

निज संवाददाता : एक ज़माने में माता-पिता कहते थे कि ज़ोर से पढ़ना याद रखने के लिए बेहतर होता है। एक नियमित दिनचर्या का पालन करना, बैठकर पढ़ना, ज़ोर से पढ़ना ही सब-कुछ नहीं है। यानी सीखने की प्रक्रिया इतनी छोटी भी नहीं होती। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि पढ़ाई में अनुशासन ज़रूरी है। एक नियमित दिनचर्या का पालन ज़रूरी है। हालांकि, सिर्फ़ ज़ोर से पढ़ना या याद करना ही नहीं, आधुनिक अध्ययन तकनीकें भी सीखने की प्रक्रिया में मदद कर सकती हैं।

1-सिर्फ़ याद करना ही नहीं : यह समझना ज़रूरी है कि पढ़ना सिर्फ़ याद करने का नाम नहीं है। छात्र किसी विषय को पढ़ने के कुछ ही दिनों में भूल सकते हैं। लेकिन अगर वे उसे तुरंत लिखने की आदत डाल लें, तो वह उनके दिमाग़ में अच्छी तरह बैठ जाता है। अगर वे घर पर विषय-आधारित परीक्षा देने या किसी विषय पर प्रश्नों के उत्तर लिखने की आदत डाल लें, तो पढ़ा हुआ लंबे समय तक याद रहता है। ऐसे में, लिखते समय दिमाग़ संबंधित विषय को याद रखने की कोशिश करता है। नतीजतन, वह ज़्यादा याद रहता है। पढ़ना अच्छा है।

2-दोबारा पढ़ना : किसी विषय को कुछ दिनों बाद भूल जाना सामान्य बात है। लेकिन अगर आप उसे दोबारा पढ़ेंगे, तो वह आपको याद रहेगा। इसीलिए पढ़ाई में रिवीजन ज़रूरी है। किसी खास विषय को हर कुछ दिनों में दोबारा पढ़ने से आपको भूले हुए हिस्से फिर से याद आ जाएँगे। 3-बड़े विषय को विभाजित करना : किसी जटिल विषय को एक साथ पढ़ने के बजाय उसे छोटे-छोटे भागों में बांटा जा सकता है। जब तक कोई भाग अच्छी तरह समझ में न आ जाए, तब तक उस पर ध्यान देना ज़रूरी है। जटिल और बड़े विषयों को दिमाग जल्दी नहीं समझ पाता। अगर उसे छोटे-छोटे भागों में बांट दिया जाए, तो उसे याद रखना आसान हो जाएगा।

4-दूसरों को सिखाना : किसी विषय को खुद समझने के बाद, उसे किसी को समझाने या सिखाने की कोशिश करना फायदेमंद होगा। अगर आप उसे किसी को समझाना चाहते हैं, तो आपको खुद को समझना होगा। जब विषय पानी की तरह सरल हो जाए, तो आप उसे दूसरों को भी समझा सकते हैं। फिर, अगर आप उसे किसी को समझाना चाहते हैं, तो आपको विषय की गहराई में जाना होगा। भौतिक विज्ञानी रिचर्ड फेनमैन की विधि कहती है कि पढ़ाई के साथ-साथ उसे सरलता से समझाने की कोशिश करने से विषय की गहराई में जाने में मदद मिलती है।

5-वास्तविक मॉडल : यदि छात्रों को विषय को वास्तविकता से तुलना करके समझाया जाए, तो वह ज़्यादा समझ में आएगा। याद भी रहेगा। इसके लिए मॉडल का इस्तेमाल किया जा सकता है। विज्ञान-आधारित शिक्षा तब ज़्यादा आसान होती है जब आप उसे व्यवहार में लागू होते हुए देखते हैं। मॉडल आपको शब्दों की तुलना में किसी विषय को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं।

ब्लू टाइग्रेस की दहाड़ : ऐतिहासिक एशियाई कप क्वालीफिकेशन के बाद

भारतीय महिला फुटबॉल टीम ने फीफा रैंकिंग में 63वां स्थान किया हासिल

यह क्वालीफिकेशन उस टीम के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ है जिसने मैदान के अंदर-बाहर कठिनाइयों का सामना किया

शुभ्रांशु राय

नयी दिल्ली : भारतीय फुटबॉल के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि में राष्ट्रीय महिला टीम ने इस सप्ताह जारी नवीनतम फीफा विश्व रैंकिंग में सात स्थानों की छलांग लगाकर 63वां स्थान हासिल किया है। यह शानदार उछाल 2026 एएफसी महिला एशियाई कप के लिए टीम के इतिहास में पहली बार योग्यता आधारित क्वालीफिकेशन के बाद आया है। निर्णायक जीत ने बढ़ाई रफ्तार 70वें से 63वें स्थान तक की यह चढ़ाई-जो 21 अगस्त, 2023 (61वां) के बाद से उनकी सर्वोच्च रैंकिंग है-पिछले महीने थाईलैंड में आयोजित एशियाई कप क्वालीफायर के फाइनल मैच में उच्च रैंकिंग वाली थाईलैंड पर 2-1 की ऐतिहासिक जीत से संभव हुई। मिडफील्डर संगीता बसफोर इस ऐतिहासिक पल की नायिका बनीं, जिन्होंने उस निर्णायक मुकाबले में दोनों गोल किए जहां केवल जीत ही भारत को महाद्वीपीय टूर्नामेंट में स्थान दिला सकती थी। यह परिणाम और भी महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि 2022 में भारत को घरेलू स्थल पर आयोजित एशियाई कप से टीम में कोविड-19 के प्रकोप के कारण मजबूरन हटना पड़ा था।

क्वालीफायर्स में शानदार प्रदर्शन

भारत की क्वालीफिकेशन यात्रा आक्रामक फुटबॉल का उत्कृष्ट उदाहरण रही

* **रिकॉर्डतोड़ शुरुआत :** मंगोलिया को 13-0 से हराकर भारत की हालिया स्मृति में सबसे बड़ी जीत।

शानदार अनुवर्ती प्रदर्शन : क्रमशः तिमोर-लेस्ते और इराक के खिलाफ 4-0 और 5-0 की ऐतिहासिक जीत।

* **निर्दोष रिकॉर्ड :** चार जीत, 24 गोल और केवल एक गोल खाते में

* हेड कोच क्रिस्पिन चेत्री के नेतृत्व में सामरिक अनुशासन का प्रदर्शन।

जिजीविषा और पुनरुत्थान

यह क्वालीफिकेशन उस टीम के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ है जिसने मैदान के अंदर-बाहर कठिनाइयों का सामना किया। 2025 की मिश्रित शुरुआत (रूस, दक्षिण कोरिया और उज़्बेकिस्तान के खिलाफ मैत्री मैचों में हार) के बाद ब्लू टाइग्रेस ने थाईलैंड में जोरदार वापसी की। चेत्री, जिन्होंने महिला फुटबॉल में शारीरिक दबाव और चोट के जोखिमों के प्रबंधन की विशिष्ट चुनौतियों पर ज़ोर दिया है ने टीम की मानसिक दृढ़ता की सराहना करते हुए कहा-'इस टीम ने दबाव में भी खराब प्रदर्शन करना सीख लिया है।'

आगे का रास्ता

कठिन चुनौतियां इंतजार कर रही हैं भारत अब ऑस्ट्रेलिया में 2026 एएफसी महिला एशियाई कप की तैयारी कर रहा है, जहां उनका सामना डरावने ग्रुप सी से होगा :

* **4 मार्च, 2026 :** वियतनाम बनाम (पर्थ)
* **7 मार्च, 2026 :** जापान बनाम (पर्थ)
* **10 मार्च, 2026 :** चाइनीस ताइपे बनाम (सिडनी) फीफा रैंकिंग में जापान (11वां) और वियतनाम (35वां) मुश्किल चुनौतियां पेश करेंगे, लेकिन मौजूदा गति एक प्रतिस्पर्धी प्रदर्शन की उम्मीद जगाती है।

महिला फुटबॉल के लिए मील का पत्थर

फीफा रैंकिंग में यह उछाल केवल संख्यात्मक लाभ नहीं है।

* यह भारत में महिला फुटबॉल के पुनरुत्थान का प्रतीक है। 1980 के 'स्वर्णिम युग' (जब भारत एशियाई कप में उपविजेता रहा) से लेकर 2009 में लंबी गिरावट और फीफा सूची से हटाए जाने तक, टीम की हालिया प्रगति निरंतर विकास को रेखांकित करती है। युवा टीमों (अंडर-17 और अंडर-20) के एएफसी क्वालीफायर में प्रतिस्पर्धा करने से भारत की पाइपलाइन भविष्य में और विकास का संकेत देती है।

डेढ़ साल बाद, ईस्ट बंगाल ने जीता डर्बी

- दो गोल दाग हीरो बने दिमित्रियोस
- मोहन बागान को हराकर ईस्ट बंगाल डूरंड कप के सेमीफाइनल में

निज संवाददाता : मोहन बागान का डिफेंस कहाँ है? विश्व कप विजेता जेमी मैकलारेन कहाँ हैं? मिडफ़ील्ड में अपुया, सहल अब्दुल समद और लिस्टन कोलासो जैसे स्टार घरेलू फुटबॉलर कहाँ हैं? कई दिनों के बाद, ईस्ट बंगाल का डर्बी में इतना दबदबा देखने को मिला। मोहन बागान पूरे मैच में कहीं नज़र नहीं आया। ईस्ट बंगाल टीम ने एक योग्य टीम के रूप में अपना दबदबा दिखाते हुए जीत हासिल की। डेढ़ साल बाद, ईस्ट बंगाल ने सीनियर डर्बी में मोहन बागान को हराया। दिमित्रियोस डायमंताकोस ने दो गोल किया। ईस्ट बंगाल ने 2-1 से जीत हासिल की और डूरंड कप के सेमीफाइनल में पहुँच गए। वहाँ उनका सामना बंगाल की टीम डायमंड हार्बर से होगा। ईस्ट बंगाल के कोच ऑस्कर ब्रुज़ो ने डूरंड डर्बी से एक दिन पहले एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक सरप्राइज़ की घोषणा की थी। उन्होंने वादा किया था कि उनकी टीम पिछली बार से बेहतर खेलेगी। ब्रुज़ो ने वाकई कमाल कर दिखाया। उन्होंने उन सभी जगहों को भर दिया है जहाँ पिछली बार ईस्ट बंगाल को दिक्कत हुई थी। उन्होंने विंग पर बिपिन सिंह जैसे तेज़तर्रार फुटबॉलर को उतारा है। उन्होंने डिफेंस में केविन सिबिले को अनवर अली के साथ जोड़ा था। मिगुएल फिगेरोआ और हामिद अहदाद जैसे विदेशी खिलाड़ी टीम में आए हैं। यही बात है कि ईस्ट बंगाल बदल गई है।रविवार को खेल की शुरुआत से ही ईस्ट बंगाल का पलड़ा भारी था। ब्रुज़ो ने एक ही झटके में मोहन बागान के कोच जोस मोलिना की टीम पर दबाव बढ़ा दिया। उन्हें पता था कि उन्हें मिडफ़ील्ड पर कब्ज़ा करना होगा। ईस्ट बंगाल के फुटबॉलरों ने यही किया। महेश नाओरेम सिंह, मिगुएल और सॉल क्रेस्पो एक-दूसरे के बहुत क़रीब थे। वे छोटे-छोटे पास खेल रहे थे। यहीं से दबाव बना। अपुया, अनिरुद्ध थापा और सहल के बीच का अंतर काफ़ी था। नतीजतन, मैदान पर गेंद से कोई आक्रमण नहीं हो पाया। पहले 20 मिनट में, ईस्ट बंगाल के फुटबॉलरों के पास गेंद थी। बागान के गोल के सामने दो मुश्किल हालात आए। लेकिन कोई गोल नहीं हुआ।मोलिना ने शुरुआत से ही गोल के लिए मैकलारेन पर भरोसा किया था। लेकिन इस मैच में उनका कोई जवाब नहीं मिला। जितनी बार भी उन्हें गेंद मिली, अनवर और सिबिले ने उन्हें रोके रखा। डुरंड में बागान के लिए लिस्टन ने सबसे ज़्यादा गोल किए। ब्रुज़ो ने भी उन्हें रोकने के लिए दो फुटबॉलरों को रखा। मोहम्मद राकिपर मौजूद थे। बिपिन, काखम और एडमंड लालरिंडिका कभी-कभी उनका साथ दे रहे थे। नतीजतन, लिस्टन बार-बार रुक रहे थे। उनका जाना-पहचाना खेल देखने को नहीं मिला। ईस्ट बंगाल के स्ट्राइकर हामिद अहदाद को चोट लगने के कारण 15 मिनट बाद मैदान छोड़ना पड़ा। ब्रुज़ो ने दिमित्रियोस डायमांटाकोस को मैदान में उतारा। यह उनके लिए एक वरदान साबित हुआ। 35वें मिनट में, आशीष राय ने बॉक्स में विपिन पर फाउल किया। ईस्ट बंगाल को पेनल्टी मिली। डायमैंटाकोस ने एक शानदार गोल करके ईस्ट बंगाल को बढ़त दिला दी। पहले हाफ के अंत में, अपुया का लंबी दूरी का शॉट पोस्ट से बाहर चला गया। यह पहले हाफ में बागान का सर्वश्रेष्ठ प्रयास था।दूसरे हाफ की शुरुआत में, बागान के कोच मोलिना ने जेसन कमिंग्स को नीचे उतार दिया। कमिंग्स ने नीचे आते ही एक मौका बनाया। वह बॉक्स में असुरक्षित थे। लेकिन सहल ने उन्हें गेंद दिए बिना खुद को मारने की कोशिश की। वह गोल नहीं कर सके। बागान को इस मौके की कीमत चुकानी पड़ी। ईस्ट बंगाल ने 52वें मिनट में एक खूबसूरत हमला किया। डायमैंटाकोस ने बॉक्स में अल्बर्टो रोड्रिगेज़ की गर्दन पकड़कर अपना और टीम का दूसरा गोल दागा। ऐसा लग रहा था कि ईस्ट बंगाल आसानी से जीत जाएगा। तभी मोलिना ने अपने बाकी बचे पत्ते खेल दिए। उन्होंने दिमित्री पेट्राटोस और दीपक टैंगरीड को आउट कर दिया। मोहन बागान ने 65वें मिनट से ही ताबड़तोड़ हमला शुरू कर दिया। उस समय, ईस्ट बंगाल भी थोड़ा रक्षात्मक हो गया था। मोहन बागान ने एक के बाद एक हमले किए। लिस्टन का शॉट पोस्ट से टकराया। 68वें मिनट में, कॉर्नर किक के बाद थापा ने दूर से शॉट मारा। गेंद नेट में चली गई। अगले कुछ मिनटों में, बागान ने कुछ और हमले किए। लेकिन ईस्ट बंगाल किसी तरह गोल बचाने में कामयाब रहा। सिबिल ने गोल लाइन पर एक गेंद बचाई। समय समाप्त हो रहा था। अंत में माहौल गर्म होता जा रहा था। दोनों टीमों के फुटबॉल खिलाड़ी गर्म होते जा रहे थे। बेशक, इसका फायदा ईस्ट बंगाल को हुआ। बागान योजनाबद्ध तरीके से हमला नहीं कर सका। अंत में, ईस्ट बंगाल जीत के साथ मैदान से बाहर हुआ। लाल-पीले प्रशंसक कई दिनों बाद डर्बी जीतने की खुशी में मदहोश थे।

पूर्व मेदिनीपुर मरीनर्स-फैनडम की एक नई लहर

सम्राट मिश्र

पूर्व मेदिनीपुर, प्राचीन ताम्रलिप्त सभ्यता की विरासत संजोए यह तटीय ज़िला भारतीय इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में इस ज़िले का नाम बार-बार गूंजता रहा है। अविभाजित मेदिनीपुर के ही शहीद खुदीराम बोस, शहीद मातंगिनी हाज़रा, सुशील धारा, बीरेन्द्रनाथ शासमल और सतीश सामंत जैसे क्रांतिकारियों के बलिदान और विद्रोह आज भी इतिहास में गहराई से प्रतिध्वनित होते हैं।लेकिन इस ज़िले की पहचान केवल राजनीति या इतिहास तक सीमित नहीं है।

यह अपने अनूठे खेल-संस्कृति और गहरे फुटबॉल-प्रेम के लिए भी जाना जाता है। इस परंपरा को और मज़बूती मिली है मोहन बागान क्लब के प्रति यहां के लोगों की गहरी आसक्ति से। मोहन बागान की सफलता अब कोलकाता की सीमाएं लांघकर बंगाल के कोने-कोने तक पहुंच चुकी है; फलस्वरूप जिलों-जिलों में अनेक फैन क्लब उभर आए हैं।

इसी क्रम में 2023 में पूर्व मेदिनीपुर मरीनर्स की स्थापना हुई। मोहन बागान समर्थकों का एक स्वस्फूर्त संगठन, जिसने बहुत तेजी से ज़िले के खेल-प्रेमियों के हृदय में जगह बना ली है।सामाजिक मीडिया पर हुई अनौपचारिक जान-पहचान से शुरू हुई यह पहल आज एक सुव्यवस्थित परिवार में बदल चुकी है। क्लब का मूल उद्देश्य ज़िले में बिखरे मोहन बागान समर्थकों को एकजुट करना और उन्हें हरे-मरून ध्वज के नीचे बांधे रखना है। किशोरों से लेकर वृद्धों तक, हर सदस्य क्लब का समर्पित समर्थक है। पूर्व मेदिनीपुर मरीनर्स के सदस्य नियमित रूप से मैदान में जाकर टीम का हौसला बढ़ाते हैं। मैच-दिवस पर वे ज़िले से कोलकाता के युवा भारती क्रीड़ांगन तक परिवहन की व्यवस्था करते हैं, बैनर-झंडे उठाते हैं और उत्साहवर्धक गतिविधियों से टीम को प्रेरित करते हैं। क्लब के वरिष्ठतम सदस्यों में से एक, तमलुक निवासी सेवानिवृत्त कर्मचारी मदन जना दशकों से लगभग हर मैच में उपस्थित रहकर निरंतर समर्थन देते आए हैं। वे पड़ोसी राज्यों में होने वाले अवे मैचों तक भी युवा-सा जोश लेकर पहुंचते हैं। हालांकि क्लब की गतिविधियां केवल खेल-मैदान तक सीमित नहीं हैं। सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना से प्रेरित होकर पूर्व मेदिनीपुर मरीनर्स मानवीय पहलों में भी भाग लेते हैं। उदाहरण के लिए, 2024 में पांशकुड़ा और आसपास के इलाक़ों में आई भीषण बाढ़ के दौरान क्लब के सदस्यों ने राहत-सामग्री के साथ पीड़ितों की मदद की। भविष्य में वे पर्यावरण-जागरूकता, स्वास्थ्य-सुरक्षा और सांस्कृतिक विकास से जुड़ी पहलों में भाग लेने की योजना भी बना रहे हैं।सबसे बढ़कर, क्लब का केंद्रीय लक्ष्य 8 से 80 वर्ष तक के लोगों में फुटबॉल और मोहन बागान की गौरवशाली विरासत का प्रसार करना है। पूर्व मेदिनीपुर की धरती से एक नई पीढ़ी उभर रही है।

लोककथा में ढल गई एक फिल्म जो हर युग में सुनाई और दोहराई जाती है

मनोरंजन

- आज भी फीकी नहीं हुई है जिसकी आभा और चमक

निज संवाददाता : आज के दौर में, जब किसी फिल्म का 50 दिन पूरे करना एक नई बात है, मुंबई फिल्म उद्योग की सबसे लोकप्रिय फिल्म 'शोले' की 50वीं वर्षगांठ, सम्मान की हकदार है। यह निर्विवाद है कि एक भारतीय सनसनी और एक हॉलीवुड वेस्टर्न के इस सिनेमाई मिश्रण में लोकप्रिय सिनेमा के इतिहास में अपनी जगह बनाने के लिए ज़रूरी सभी गुण मौजूद थे। 'शोले' मेंस्थापित, उभरते और नए कलाकारों का मिश्रण था। अपनी लंबाई के बावजूद इसकी कहानी में एक सटीकता, धारदार संवाद, सफल संगीत, हास्य और एक खलनायक-गब्बर सिंह के रूप में अमजद खान, जिन्होंने फिल्मों में खलनायकी की नई परिभाषा गढ़ी - इसकी कुछ अन्य खूबियां थीं। यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि रमेश सिप्पी की यह प्रतिष्ठित फिल्म तकनीकी और निर्माण गुणवत्ता के मामले में भी अपने समय से आगे थी। ऐसे समय में जब ज़्यादातर भारतीय फ़िल्में 35 मिमी में फ़िल्माई जाती थीं, शोले ने अपने दर्शकों के लिए 70 मिमी फ़िल्मों और स्टीरियोफ़ोनिक ध्वनि का अद्भुत जादू पेश किया। यह सच है कि शोले से पहले और बाद की फ़िल्मों में इसकी कुछ खूबियां मौजूद रही हैं। तो फिर, जनमानस में शोले की दीर्घायु और श्रद्धा का क्या कारण है? सिनेमाई अमरता अक्सर किसी फ़िल्म की प्रासंगिक बने रहने की क्षमता पर निर्भर करती है। 50 साल पहले भारत के स्वतंत्रता दिवस पर रिलीज़ हुई यह फिल्म अब सिर्फ़ फिल्म नहीं, बल्कि एक मुकम्मल अनुभव बन चुकी है। एक एहसास, जो हर बार देखने पर नया रंग ले लेता है। हर पीढ़ी इसे अपनी नजर से देखती है और उसमें अपना कोई अक्स देख लेती है। यह फिल्म हर दौर से दोस्ती करना जानती है और सबसे वैसे ही घुल-मिल जाती है जैसे जय-वीरू की दोस्ती।70 के दशक की मसाला फिल्म शोले के डायलॉग, निर्देशन और तकनीकी पहलुओं पर दशकों से चर्चा होती रही है। लेकिन ख़ास बात यह है कि इस फिल्म ने मनोरंजन की राह पकड़कर ही समाज और हिंदी सिनेमा के पुराने जमाने के ढर्रों को चुनौती दी।आज़ादी के बाद की भारतीय फिल्मों में कहानियां अक्सर तयशुदा ढर्रे पर चलती थीं, लेकिन 'शोले' की सबसे बड़ी खासियत ये थी कि उसने बॉलीवुड की उन पुरानी रूढ़ियों, खांचों और स्टीरियोटाइप्स को तोड़ दिया, जो वर्षों से फिल्मी कहानियों का हिस्सा थे।शायद इसी वजह से, पचास साल बाद भी 'शोले' हमें पुरानी या समय के पीछे की फिल्म नहीं लगती। इसकी सोच और संवेदनाएं आज के ज़माने की लगती हैं, जैसे वक्त की परवाह किए बिना, अपनी अलग ही धुन में चल रही हों। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो 'शोले' से पहले के बॉलीवुड हीरो अक्सर बिना दाग-धब्बे के, नैतिकता की मूर्ति और आदर्शवादी सांचे में ढले नायक हुआ करते थे। शोले ने इस परंपरागत आदर्श सांचे को ताक़ पर रख दिया। यहां जय और वीरू थे। जेल से छूटे, चोर-उचक्के बदमाश। जिनका अतीत कहीं साफ़ नहीं था। वो शराब पीते थे, झूठ बोलते थे और ठग भी थे। लेकिन जब ठाकुर बलदेव और रामगढ़ की उम्मीदें इन दोनों पर टिकीं, तो ये नायक ना सिर्फ़ बदले, बल्कि ख़तरनाक गब्बर सिंह के सामने डटकर खड़े हो गए।बदमाश होकर भी गांव की रक्षा की, दोस्ती निभाई, और इंसानियत दिखाई।यूं तो शोले से पहले भी हिंदी सिनेमा में कई यादगार विलेन हुए लेकिन गब्बर सिंह की खलनायकी का अंदाज़ उस दौर के लिए बिल्कुल नया और क्रांतिकारी था। उस दौर के प्राण, के एन सिंह और अजीत जैसे आमतौर पर सूट-बूट में नज़र आने वाले शहरी अंदाज़ के विलेन्स से गब्बर सिंह पूरी तरह उलट था। इसमें हिंसा को बहुत हद तक सशक्त मगर सांकेतिक सीन्स के ज़रिए दिखाया गया था। इसकी सिनेमैटोग्राफी, बैकग्राउंड स्कोर, एडिटिंग और कहानी का तालमेल इतना मजबूत था कि हर सीन दिलो-दिमाग़ में बस गया। हालांकि, 'शोले' में सबसे ज़्यादा जो किरदार छाया हुआ है, वह दुष्ट गब्बर का है। इसकी सीधी-सादी, खौफनाक खलनायकी को देखते हुए, गब्बर का किरदार शायद बहुस्तरीय नहीं है। प्रलय के दिन की तरह, वह हिंसा और प्रतिशोध के एक विकृत विचार से प्रेरित एक किरदार है। अधिक सूक्ष्म विश्लेषण से उन सामाजिक कारकों की पहचान की जा सकती थी जिन्होंने उसे भटकाकर अपराध की अंधेरी दुनिया की ओर धकेला। लेकिन यही वह स्पष्ट अंधकार है जो गब्बर जैसे व्यक्ति को मनुष्य और उसकी सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त सभी बुराइयों का एक सतत प्रतीक बनाता है। हिंदी सिनेमा के कई स्टीरियोटाइप को ध्वस्त करती हुई शोले एक लोककथा जैसी बन गई है जो पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती है, दोहराई जाती है लेकिन कभी भी अपनी चमक नहीं खोती।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय** : 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय** : 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक : अजय कुमार मोहता**, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)